ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६१ अंक ९ मई २०१४ वैशाख २०७१ वार्षिक मूल्य १०० रु०

देशभक्त वीर महाराणा प्रताप

31 मई जिनकी जन्मतिथि है

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० राहुल आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 100 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1000 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :६१ अंक : ९
मई २०१४ विक्रमाब्द २०७१
दयानन्दाब्द १९० कलिसंवत् ५११५
सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११५

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वेदोपदेश	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	असावधान-आर्यों का समाज	4
4.	वेदवाणीः वयं राष्ट्रे जागृयामः	6
5.	महाराणा प्रताप	9
6.	युग पुरुष स्वामी दयानन्द कौन थे ?	12
7.	अंग्रेजों के आगमन से पहले भारत में शिक्षा..	14
8.	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय.....	16
9.	इस्लामी शासन के कारनामे	17
	समाचार प्रभाग	
10.	'कन्या गुरुकुल चोटीपुरा' की गौरवपूर्ण..	22
11.	योगसूत्रों को कण्ठस्थ करके सुनाने.....	24
12.	योगदर्शनम् के सम्पूर्ण ग्रन्थ को सुनाने वाने..	24

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १०० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वेदोपदेश

१३- चैत्र

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादं अतन्द्राः।।

ऋग्वेद० ८.२.१८।। अथर्व० २०.१८.३।।

विनय

आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं एवं बहुत से अत्यन्त लाभकारी कार्यों को शुरु करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वंचित हो जाते हैं। अतः आलस्य करनेवाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। यों कहना चाहिए कि परमात्मा के देवता आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार-यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं- इन द्वारा पूरा नियमन; अनुशासन (Discipline) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध, पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है- बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा दी जाती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लङ्घन न करें। ये देवता इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर-बिल्कुल भूल चूक से रहित होकर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस सत्वगुण के बने हुवे हैं जो कि तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किये हुवे हैं। अतः आलस्य प्रमाद करनेवाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुवे) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं? अतः उन्हें देव बार-बार प्रमादों के लिए दण्ड दे देकर- उन्हें पुनः पुनः ठोकरें मारते हुवे- जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगत् रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार-उसकी अनुकूलता में- जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ-कर्म ही है। मनुष्य को इस यज्ञार्थ-कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊँचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस तरह का कोई भी कर्म करना इस संसार-यज्ञ के लिए सोम-रस का सेवन करना है। जरा देखो- इन देवों के प्यारे लोगों को देखो- जो कि अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम-रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्त्तव्य में सदा जागृत, कटिबद्ध, संनद्ध रहते हुवे देवतुल्य जीवन बिता रहे हैं।

शब्दार्थ—

(**देवाः**) देव लोग (**सुन्वन्तं**) यज्ञ कर्म करते हुवे की (**इच्छन्ति**) इच्छा करते हैं। (**न स्वप्नाय स्पृहयन्ति**) निद्राशील सुस्तों को नहीं चाहते। (**अतन्द्राः**) स्वयं आलस्यरहित ये देव लोग (**प्रमादं**) गलती, भूल करनेवाले का (**यन्ति**) नियमन करते हं।

(—वैदिक विनय से)

सम्पादकीय....

आर्यसमाज में प्रचलित सन्ध्या-यज्ञ पद्धति

❑ विरजानन्द दैवकरणि

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रादुर्भूत होने से पूर्व भारत वर्ष में अनेक प्रकार की सन्ध्यायज्ञ पद्धितियां प्रचलित थीं। महर्षिजी जीवनभर सत्य का अन्वेषण करते रहे और उसे तर्क की कसौटी पर परख कर स्वीकार करते रहे। इसी अन्वेषण कार्य में सन्ध्या-यज्ञ पद्धति का भी परिष्कार उन्होंने चार बार किया। पौराणिक जगड्वाल के जंजाल से पृथक् करके समय-समय पर सन्ध्यादि का पुस्तक रूप में प्रकाशन करते रहे। एक पद्धति तो हस्तलिखित रूप में ही रक्खी रही, सम्भवत: वह प्रथम प्रति रही होगी। सर्वप्रथम प्रकाशित सन्ध्याविधि की कोई प्रति इस समय उपलब्ध नहीं है। प्रचलित संस्कारविधि महर्षि जी की अन्तिम रचना है। इससे पूर्व पञ्चमहायज्ञविधि में वर्णित सन्ध्यापद्धति की ओर आर्यसमाज का ध्यान अति सीमित मात्रा में ही रहा। यह आश्चर्य का विषय है कि सभी आर्यसमाजों में सन्ध्याविधि तो पंचमहायज्ञविधि में प्रोक्त अपनाई जाती रही, परन्तु यज्ञपद्धति पंचमहायज्ञ पद्धति की न लेकर संस्कारविधि में लिखित अपना ली गई।

यदि संस्कारविधि का गहन स्वाध्याय किया गया होता तो उसमें प्रदर्शित सन्ध्याविधि भी आर्यजगत् में प्रचलित होगई होती। संस्कारविधि के वेदारम्भप्रकरण में महर्षि जी लिखिते हैं....."....पश्चात् सायंकाल तक विश्राम और गृहाश्रम संस्कार में लिखा सन्ध्योपासन आचार्य बालक के हाथ से करावे।" ध्यान रहे यहां पंचमहायज्ञविधि में वर्णित सन्ध्या की अपेक्षा संस्कारविधि में लिखित सन्ध्याविधि करने का आदेश है। यह विधि पंचमहायज्ञविधि में वर्णित सन्ध्योपासन की परिष्कृत विधि है।

पुन: संस्कारविधि के गृहाश्रम प्रकरण में महर्षि जी लिखते हैं-

'.....पश्चात् एक कोश वा डेढ कोश एकान्त जंगल में जाके योगाभ्यास की रीति से परमेश्वर की उपासना कर, सूर्योदयपर्यन्त अथवा घड़ी, आध घड़ी दिन चढ़े तक घर में आके, सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म नीचे लिखे प्रमाणे यथाविधि उचित समय में किया करें। इन नित्य करने के योग्य कर्मों में लिखे हुए मन्त्रों का अर्थ और प्रमाण पञ्चमहायज्ञविधि में देख लेंवे। प्रथम शरीरशुद्धि अर्थात् स्नानपर्यन्त कर्म करके सन्ध्योपासन का आरम्भ करें।

आरम्भ में दक्षिणहस्त में जल लेके—

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।१।।.....इन तीन मन्त्रों से एक-एक आचमन कर.....।'

यहां भी सन्ध्यापद्धति पंचमहायज्ञविधि में वर्णित न लेकर नीचे लिखी विधि से करने का प्रावधान किया है। इससे सिद्ध है कि पंचमहायज्ञविधि मन्त्रों के अर्थ और सन्ध्या क्यों करनी चाहिये इसके प्रमाणों तक ही सीमित कर दी गई थी। यदि सन्ध्या यज्ञ पद्धति पंचमहायज्ञविधि की ही अभीष्ट होती तो महर्षि

जी संस्कारविधि में इन पंचमहायज्ञों के विधान की पुनरुक्ति क्यों करते।

अस्तु! आर्यजगत् में दैनिक यज्ञ में विश्वानि देव आदि आठ मन्त्रों का पाठ करके '**ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा**' इत्यादि से अंग स्पर्श करके यज्ञारम्भ करने की विधि प्रचलित है। परन्तु यह विधि संस्कारों के लिए है, न कि दैनिक यज्ञ के लिए। दैनिक यज्ञ की विधि हेतु महर्षि जी संस्कारविधि में प्रदत्त सन्ध्याविधि के बाद लिखते हैं—....**ओं नमः शम्भवाय च**.....इससे परमात्मा को नमस्कार करके '**शन्नो देवी०**' इस मन्त्र से तीन आचमन करके अग्निहोत्र का आरम्भ करें।

इस यज्ञविधि में अग्न्याधान, समिदाधान और अदितेऽनुमन्यस्व आदि से जलप्रोक्षण आदि क्रिया करके आघारावाज्याहुति के अनन्तर सूर्योज्योति इत्यादि से प्रारम्भ करके सोलह आहुति प्रदान करनी चाहियें। यदि पंचमहायज्ञविधि में वर्णित यज्ञविधि देखें तो उसमें केवल दस ही मन्त्र हैं। सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास की विधि में केवल चार ही मन्त्र हैं। अधिक आहुति देनी हो तो गायत्री मन्त्र और विश्वानि देव० मन्त्रों से दें। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पंचमहायज्ञ विधि के अनुसार सन्ध्या-यज्ञादि करने का विधान लिख दिया है। इन तीनों ग्रन्थों में केवल संकेत मात्र है कि सन्ध्या यज्ञादि करने चाहियें। पूर्णविधि संस्कारविधि में ही है जो कि अन्तिम और अधिक अन्वेषणपूर्वक की गई रचना है।

कुछ सज्जन दैनिक यज्ञ के अन्त में एक वा तीन गायत्री मन्त्र बोलकर आहुति देते हैं, वह भी विधिरहित हैं। इन मन्त्रों का प्रयोग तभी करना लिखा है जबकि सत्यार्थप्रकाशशोक्त चार मन्त्रों से ही यज्ञ करना हो। इन्हें दैनिक या का स्थायी भाग नहीं बनाना चाहिये। इसी भांति दैनिक यज्ञ में '**अयन्त इध्म आत्मा०**' इस मन्त्र से पाँच घृताहुति देने की भी परिपाटी गलत चल पड़ी है। ये आहुतियां संस्कारों के समय दी जाती हैं न कि दैनिक यज्ञ में। इसके प्रमाणार्थ संस्कारविधि के गृहाश्रम-प्रकरण में प्रदर्शित दैनिकयज्ञविधि में देखा जा सकता है। इसलिये सभी आर्यों और आर्यसमाजों से मेरा नम्र निवेदन है कि सन्ध्या-यज्ञ पद्धति की एकरूपता के लिए महर्षि दयानन्दजी द्वारा संस्कारविधि में प्रदर्शित विधि के अनुसार ही आचरण करना चाहिये। अपनी कल्पना से अनेक प्रकार की पद्धति चलाना अशोभनीय है। हमारे लिए ऋषि दयानन्दजी महाराज प्रमाणाभूत हैं। इन्होंने सभी पद्धतियों का अवलोकन और अन्वेषण करने के बाद ही आर्यजगत् को यह विधि प्रदान की है, अतः उनके मन्तव्यानुसार ही चलना चाहिये।

यह तभी सम्भव है जब हम महर्षि दयानन्दजी के सभी ग्रन्थों का सूक्ष्मदृष्टि से अध्ययन करेंगे और उन ग्रन्थों के क्रमशः लेखन की पूर्वापरता पर भी ध्यान रखकर ऋषिजी के मन्तव्यों को समझने का प्रयास करेंगे। ऋषि लोग अपने पूर्वकृत प्रयास का सर्वथा निराकरण न करके उसके परिष्कार हेतु नूतन रचना करके पूर्वोक्त वचन की सीमा बांध दिया करते हैं। महाभाष्यकार पतञ्जलिमुनि जी महर्षि पाणिनि जी के सूत्रों की व्याख्या में अष्टाध्यायी के इसी प्रकार के असंगत-से प्रतीत होने वाले स्थलों के समाधान हेतु इसी प्रकार का समाधान किया करते हैं। वही शैली ऋषि दयानन्दजी की भी समझनी चाहिये।

असावधान-आर्यों का समाज

❑ विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

मालदा बाग; पुरानी गुड़ मण्डी, शाहपुर, जनपद...., मुजफ्फरनगर-२५२३१८ (उ.प्र.), मो.: ९९२७५७५७७७

श्री योगीराज अरविन्द घोष ने ''आर्य'' पत्रिका के वोल्यूम आई.पी.-६३ में 'आर्य' शब्द पर लिखा है कि ''मानवीय भाषा में इससे उत्तम और कोई शब्द नहीं है।''

निरुक्तकार ..... ''**आर्यः ईश्वरपुत्रः**'' अर्थात् आर्य ईश्वरपुत्र है, ऐसा ६-२६-१ में कहते हैं। आर्यत्व का आधार वेद है। जब आर्य वेद नहीं पढ़ेंगे-तो आर्यसमाज स्वतः मर जायेगा।

सृष्टि के प्रारम्भ में हमें परमात्मा ने वेद का ज्ञान दिया। अरबों वर्षों से भी यह वेदज्ञान इतना ही नवीन है जो अरबों वर्षों पूर्व था। जितना नवीन उस काल में था-उतना नहीं नवीन आधुनिक जगत् में है, आनेवाले समाज के लिये भी उतना ही नवीन है। ज्ञान वृद्ध नहीं होता। ज्ञान सदैव नम्र बना रहता है। नया बना रहता है।

राजा को यदि ब्रह्मज्ञान नहीं होता, तो वह राष्ट्र को कदापि ऊँचा नहीं बना सकता। राजा का राजधर्म है कि वह घर-घर जाकर वेदज्ञान से राष्ट्र को पवित्र बनावे। राजा जितना तपा हुआ होगा-उतना ही प्रजा को सुख देनेवाला होगा। हिंसा धर्म अपनाने वाले राजा के राष्ट्र में अंधेरा छा जाता है। दुष्ट राजा अपनी संस्कृति से, धर्म से स्नेह नहीं करता। वह अपने वंश के साथ-समय पाकर स्वयं नष्ट हो जाता है। वह अनार्य होता है-नास्तिक होता है। (१२-५-४५ अथर्ववेद)।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने कहा था-वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य भी वेद की रक्षा करना था और रक्षा करना ही है। अकेले महर्षि ने विश्व में वेदों का नाम गुंजा रक्खा था। भारत में उत्पन्न हर प्राणी आर्य है-इसी से देश का नाम आर्यावर्त है। चतुर्थ वर्ण शूद्र भी आर्य है। वह अपने सेवाभाव के परिश्रम करने में हिमाकत नहीं मानता। अपनी अपरिहार्य सेवा से वह संसार का महान् उपकार करता है। अपनी सेवा श्रद्धा को नीचे नहीं गिरने देता। मानव-सृष्टि के दुःखों को अपनी शारीरिक सेवा द्वारा दूर करने का बीड़ा उठाने वाला शूद्र नाम से जाना जाता है-किसी जाति विशेष का नाम शूद्र नहीं है। वह आर्य-सेवक भी है। वह किसी को हानि नहीं पहुंचाता, किसी से लड़ना वह नहीं जानता। नम्रता उसका प्रकार है, स्वभाव है।

अपने को आर्य या आर्यसमाजी कहानेवाले कितने जन हैं-जो वेद पढ़ते हैं। वेद पढ़ना तो दूर वे वेदों का नाम तक भी नहीं जानते। वेद-शिक्षाहीन ऐसे लोग शूद्रों से बहुत नीचे रह जाते हैं। महर्षि ने शूद्रों-दलितों-हरिजनों-दुःखियों और स्त्रियों को खूब उभारा है। उन्हें स्नेह दिया आदर दिया है। विधवाओं का मार्ग प्रशस्त कर उनका उत्थान किया है। वेद पढ़ने का यज्ञ करने का अधिकार दिलाया है।

मैं देख रहा हूँ आज आर्यसमाजी यज्ञ कराने की ज्यादा से ज्यादा दक्षिणा का वचन पाकर ही यज्ञ कराने आते हैं। ब्रह्मा पद पाकर अपने आपको वेद का महान् पण्डित होना जताते हैं, उन्हें यह जानकारी भी है कि यज्ञ का ब्रह्मा चारों वेदों का पण्डित ब्राह्मण होता है। उन्हें 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'-की कोई विचारणीय चिन्ता नहीं है। केवल उनकी नजर मोटी दक्षिणा प्राप्त करने पर ही टिकी रहती है, वे ही आर्यसमाज को निचोड़ रहे हैं। वैदिक आर्यधर्मी अंधेरे में जा रहे हैं। आर्यबन्धुओं के असावधान-अज्ञान के कारण लोग वेदों का नाम भूलते जा रहे हैं। वे वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने पर जोर नहीं देते। वेद समाज में ओपरे-ओपरे से होते

जा रहे हैं।

इसी कारण वैदिक सभ्यता-संस्कृति पर पुराणवादी पाखण्डी नास्तिक हावी होते जा रहे हैं। मूर्ति-पूजा घटने के बजाय प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन्होंने मूर्तिपूजा को अपने और अपने परिवार की रोजी-रोटी का प्रबल व्यापार और धर्मस्तम्भ मान लिया है-प्रभु पूजा को छोड़ दिया है। वेद में कहीं भी मूर्तिपूजा का नाम नहीं है। यह सृष्टिकर्ता ईश्वर का बहुत बड़ा अपमान है। पिता का अपमान कर सन्तान कभी सुखी नहीं रह सकती है। मूर्तिपूजा से समाज कायर-कमजोर-भिखारी बनता जा रहा है। इससें समाज-जाति, राष्ट्र-द्रोही बनता है। धर्म के प्रति इनका नजरिया शून्य है। भिक्षावृत्ति इनका राष्ट्र है-धर्म है, तप और त्याग है। सामाजिक-राजनैतिक लज्जा-हया का यहां नामोनिशान नहीं। भिक्षावृत्ति इनकी कुशल कारीगरी है, इसी से ये नपुंसक जीवन से जीना ही अपनी वीरता व बहादुरी मानते हैं। स्वाभिमान इनका पाताल लोक में चला गया है। इन्होंने ही देश को धर्मनिरपेक्षता के कांटों में उलझा रक्खा है। कहाँ हमारा हिमालय है ? कहां मानसरोवर है ? कहाँ तिब्बत लाहौर-करांची है ? कहाँ सिन्धु दरिया बहता है ? कहाँ खैबर-पख्तून है ? जहाँ राष्ट्र धर्म नायक सीमान्त गांधी अब्दुल गफ्फार खां जीवनभर देश की आजादी के लिये ललकारते रहे। इन गांधीवादी धर्मनिरपेक्ष नेताओं ने उस महामानव को पहाड़ों से नीचे नहीं आने दिया। सदा उसका अपमान करते रहे हैं। मैं इन दुर्भावनाओं से बहुत पीड़ित रहता था। गुरुकुलवास में ये कुत्सित राजनैतिक दुराग्रह मुझे कचोटते रहते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का वचन है कि हर आर्य के सिर पर 'ऋषियों का ऋण है। इस ऋण से उऋण होने का एकमात्र उपाय यही है कि वेदमंत्रों का तथा आर्षग्रन्थों का अध्ययन करें और उनका प्रचार करें। अन्यथा 'आर्षत्व' का कोई गौरव नहीं और ऋषिऋण से उऋण होने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं है।

महर्षि ने आर्यसमाज के तृतीय निगम में यही दिया है कि-''वेद सब सत्यविधाओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। केवल धर्म नहीं-परम धर्म कहा है। **यजुर्वेद ३४-४७ मंत्र में कहा है कि**—परमात्मा ही वेद ज्ञान देता है, वही इसकी रक्षा करता है। ईश्वर स्वयं स्पष्ट आदेश करता है, ''मैं ही वेदों को रचता हूँ तथा मैं ही पूर्व कर्मानुसार धनादि फल का प्रदाता हूँ। - १०-४९-१ ऋक्

अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म
कृणवं मह्यं वर्धनम्।
अहं भुवं यजमानस्य चोदिता यज्वनः
साक्षि विश्वस्मिन्भरे।।१।।

अर्थात् मैं स्तुतिकर्ताओं को शाश्वत ऐश्वर्य, निवास योग्य लोक, मोक्ष तथा ज्ञान देता हूँ। मैं वेद को उत्पन्न करता हूँ। यह वेद मेरी ही महिमा को बढ़ाता है। यज्ञ-दान-सत्संग करनेवाले को सन्मार्ग में आदेश करनेवाला मैं ही हूँ। मैं कुसङ्गी-अयज्ञशीलजनों को ही सारे युद्धों में पराजित करता हूँ।। २।।

'न यो ररे आर्यं नाम दस्यवे' १०-४९-३— अर्थात् मैं विद्वानों के अज्ञान आवरण को हटाकर उन्हें ज्ञान देता हूँ। वेदमंत्रों के अभ्यासियों की रक्षा करता हूँ। मैं ही वह हूँ जो दुष्टों को कदापि आर्य की संज्ञा प्रदान नहीं करता।। ३।।

अहं रन्धय मृगयं श्रुतर्वणे यन्मा जिहीत
वयुना चनानुषक्।
अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सख्याय
षड्गृभिमरन्धयम्।।१०-४९-५ ऋग्वेद।।

अर्थात्-मैं वेदोपदेश अनुगामी शिष्य आदि की विषय-वासनाओं की प्रवृत्ति को वश में करता हूँ जिससे वह स्वज्ञान तथा कर्म द्वारा सतत मेरी ओर ही आये। मैं अपनी ओर आनेवाले की आत्मा को विनयशील बनाता हूँ तथा शिष्य के लाभार्थ उनमें गुरुजनों-माता पितरों के प्रति आस्थान श्रद्धा का निर्माण करता हूँ।।५।।

इसीलिये महर्षि अत्रि ने भी वेदशास्त्र विश्व का अपौरुषेय महान् ग्रन्थ माना है। ''**नास्ति वेदात्परं शास्त्रं**'' वेदज्ञान से बढ़कर प्राचीन कोई धर्म-ग्रन्थ संसार में नहीं है॥

वेदवाणीः वयं राष्ट्रे जागृयामः – हम राष्ट्र रक्षाहित सदा जागते रहें

❑ आचार्य आर्य नरेश

यदि विदेशी अत्याचारियों गोरों के 'नामपट' भारत से हटने चाहिएं तो क्या मुगल हमलावरों व उनकी सन्तानों के नाम-पट रहने चाहिएं?

''गोरे विदेशी थे तो क्या 'मुगल' स्वदेशी हैं?'' गोरों की सहायता से पाँच-सात को छोड़ 100% मुसलमानों ने देश बांटकर 'पाक' की मांग की। दोनों की भाषा, मजहबी किताब, लिपि, नबी व इबादतस्थल विदेशी। दोनों गो-हत्यारे, गोमांस भक्षक, लुटेरे, आर्य-खालसा हिन्दुओं के कातिल, अन्यायकारी, पक्षपाती, अत्याचारी, माँ-बहन-बेटी के व्यभिचरी, श्रीराम-कृष्ण-वेद के माननेवालों को विधर्मी बनानेवाले राष्ट्रद्रोही हैं। भारतमाता, गोमाता, वेदमाता तथा आर्यसभ्यता दोनों को पसन्द नहीं है। दोनों ने अनगिनत मन्दिरों को तोड़ा है एवं भारत का धन, लूट-लूट कर विदेश भेजा है। दोनों ने ही हमारे वैदिक विज्ञान के लाखों श्रीसमुद्रगुप्त ने श्री वराहमन्दिर द्वारा ग्रन्थों को जलाया है एवं अब भी भोले-भाले लोगों को विधर्मी बना कर आर्य (हिन्दू) संस्कृति को मिटाने में लगे हैं। ध्यान रहे कि श्रीराम मन्दिर को तोड़कर विदेशी विधर्मी बाबर द्वारा बनाए गए ढाँचे को तोड़कर उसे मुक्त करवाने का जब महाराष्ट्र भक्तिपूर्ण कार्य किया गया तो अभी भी विदेशी मुगलों की कश्मीर आदि में रहनेवाली सन्तानों ने स्वदेशी श्रीराम के प्रति अपनी भक्ति न दिखाकर विदेशी क्रूर अत्याचारी कातिल हमलावर 'बाबर' का साथ देते हुए कश्मीर में लगभग 108 मन्दिर तोड़ गिराए। क्या विदेशी हमलावरों का साथ देनेवाले कभी स्वदेशी हो सकते हैं? अतः जब हमने अंग्रेजों के जाने के पश्चात् भारत व उसकी राजधानी दिल्ली से अनेक गोरों के नाम सड़कों व भवनों से हटा दिए तो पुनः किसलिए विदेशी हमलावर मुगल-सन्तानों के नामों को यहां महिमा मण्डित कर रहे हैं? क्यों न देशद्रोहियों का भारत के भाल पर लगा काला धब्बा शीघ्र मिटा दें। **दिल्ली में हमलावर विदेशी मुगलों व उनकी दुष्ट सन्तानों पर मार्गों के नाम—**

१. **कुतुबरोड व कुतुबदीन**—इसने ११९३ से १२०२ तक अनेक मन्दिरों को तोड़ा, मुसलमान न बनने पर लाखों हिन्दुओं को कत्ल कर मीनारें बनाई, करोड़ों का धन लूटा। बहुत से हिन्दुओं को गुलाम बनाकर उनके गले में गुलामी के पट्टे डाले। प्राचीन 'कुतुब' ज्योतिष शब्द है ध्यान में रहे कि कुतुबमीनार इसने नहीं किन्तु गुप्तकाल में बनाई थी।

२. **अलाउदीन खिलजी रोड**—१२९२ से १३२१ तक अनेक मन्दिर व मूर्त्तियां तोड़कर सड़कों व (मस्जिदों में बिछाई) अनगिनित हिन्दुओं का कत्ल व धन लूटा। चित्तौड़ की महारानी को लूटने हेतु कतलेआम से धरती लाल कर दी। अपने राजकाल में नियम बनाया कि मुस्लिम अधिकारी जो भी मांगें- 'धन, सोना, चांदी, बीवी' उसे हिन्दू दे दे। कोई अधिकारी पान चबा रहा हो तो उसकी पीक हेतु हिन्दू अपना मुंह खोल ले।

—हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब खण्ड ३० पृ. १६६

३. **अमीर खुसरो**—खिलजी द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचारों को देखकर नाचता था व मुसलमानों द्वारा भारत में उन्हें विधर्मी बनाने का सबसे अच्छा स्थान बताता।

४. **बाबर रोड**—१५२६ के आसपास लगभग ढ़ाई लाख आर्यखालसा हिन्दुओं को कत्ल किया। राममन्दिर को तोड़ा व उस पर हिन्दुओं के खून से गारा बनाकर मस्जिद बनाई। अनेक माँ-बहन-बेटियों को बलात्कार व निकाह और अथाह धन लूटा व मन्दिर तोड़े। श्रीगुरुनानक देवजी को इसी ने जेल में डाला था।

५. **शेरशाहसूरी रोड**—कुरान के आदेश से अनेक हिन्दुओं का कत्ल किया। उनकी माँ-बहन-बेटियों से ब्लात्कार व निकाह और अथाह धन लूटा। अनेक लोगों को मुसलमान बनाया **(मुगलों द्वारा लूट व कत्लेआम के प्रमाण हेतु देखें-इलियट डाऊसन इतिहास)**

६. **हमायूं रोड**—जिसे विदेशी मुस्लिमपरस्त कांग्रेस पूज रही है एवं उसके मकबरे पर करोड़ों खर्च कर रही है उसने १५३० में जहां उ.प्र. में महाराजा युधिष्ठिर की यज्ञशाला को तोड़कर उस पर 'नीली छत्तरी' नाम की मस्जिद बनाई वहां उसके साथ-साथ अनेक हिन्दुओं के मुस्लिम न बनने पर कत्ल किया। अनेक माँ, बहन, बेटियों से व्यभिचार बलात् निकाह किया व करोड़ों का धन लूटा।

७. **जलालूदीन 'अकबर' रोड**—१५३८ में इस विदेशी कांग्रेस के पूज्य महानीय ने केवल चित्तौड़ पर लड़ाई देखने आए 30000 निहत्थे हिन्दू, बच्चों, महिलाओं, बूड्ढ़ों का बेरहमी से कत्ल किया। अनेक मन्दिरों को तोड़ा लूटा, अनेक महिलाओं को काम-वासना का शिकार बनाया। आज भी आगरा के बादलगढ़ (लालकिला) में उसकी औरतों का हरम सुरक्षित है। उस पर लगे भारत पुरातत्त्व विभाग के बोर्ड पर अंकित है कि 'यहां अकबर अपनी 5000 औरतों के विषयभोग हेतु गुलाम बनाकर रखता था।' 'अकबर' का अर्थ महान् होता है क्या वह था?

८. **जहांगीर रोड**—१६०० के लगभग इस दुष्ट ने श्रीगुरु अर्जुनदेवजी को मुसलमान न बनने पर गर्म-गर्म आग पर रखे लोहे के तवों पर जला-जला कर मार दिया था। मुसलमान न बनने पर असंख्य आर्य खालसा हिन्दुओं का कत्ल किया, मन्दिरों को तोड़ा, करोड़ों रुपया लूटा और राम कृष्ण सिख आदि देवों की मूर्तियों को तोड़कर उस पर गोओं को कत्ल कर मांस व खून चढ़ाया। रोड के साथ-साथ इसके नाम की दिल्ली में जहांगीरपुरी भी है।

९. **शाहजहां रोड**—१६४५ के आस-पास इस मुगल सन्तान ने भी अपने कुरान 'दीन' का पालन करते हुए अनेक मन्दिर तोड़े, उन पर मस्जिदें बनाईं, मुसलमान न बनने पर अनेक भारतीयों का कत्ल किया।

१०. **औरंगजेब रोड**—१६६० के आस-पास मथुरा में बने प्रसिद्ध कृष्ण जन्म मन्दिर को तोड़ा। उस की मूर्ति पर गोमांस चढ़ाकर उसे आगरा की जहांनारा मस्जिद की सीढ़ियों में मुसलमानों हेतु ठोकरें मारने को डाला। मुसलमान न बनने पर श्री गुरु तेगबहादुर, भाई मतिदास, भाई सहीदास, भाई दयाला की गर्दन काटकर, आरे से चीरकर, रूई लपेट जलाकर और गागर में आलू की तरह उबाल-उबाल कर मारा। मुसलमान न बनने पर अनेक हिन्दुओं का कत्ल किया। कत्ल से बचने हेतु जीने का टेक्स जिजिया लिया। कश्मीरसहित पूर्ण देश के लाखों आर्य खालसा हिन्दुओं के जनेऊ तोड़े एवं मन्दिरों को तोड़कर कुरान के अनुसार मस्जिद बनाईं।

११. **टीपु सुलतान रोड**—१६८० के आस-पास इस मुसलमान शासक ने आर्य खालसा हिन्दुओं

द्वारा मुसिलम दीन स्वीकार न करने पर कुरान के आदेश से २० वर्ष से ऊपर आयु के लोगों का बड़ी बेरहमी से कत्ल किया। माता-पिता व उनके बच्चों को एक साथ गले में फांसी का फंध डालकर व मुंह में गोमांस ढूंसकर मौत की सजा दी। अनेक को नंगा करके हाथी के पैरों तले कुचलकर मरवा दिया। **(मुगलों द्वारा भारत में 'कातिलाना' जेहाद-ले०-जगदीप सेन, हिन्दू राइटर्स फोरम, १२३-बी, एम.आई.जी. प्लैट्स, राजोरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७)**

१२. सिकन्दर लोधी रोड—इसके कुरानिक मुस्लिम राज में जब एक सज्जन पण्डित ने (कुरान को बिना पढ़े) यह कह दिया कि हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म दोनों ही अच्छे हैं तो मौलवियों ने उस पर इस्लाम मजहब की तौहीन करने का आरोप लगा दिया और मृत्युदण्ड सुना दिया। उसे कहा गया कि या तो वह मुसलमान बन जाए अथवा कत्ल होना स्वीकार किया। महामूर्ख, मुस्लिमपरस्त विदेशी कांग्रेस नेता विचार करें। इसके नाम की लोधी कॉलोनी भी दिल्ली में है।

१३. ख्वाजा निजामुदीन रोड व स्टेशन—इस व्यक्ति ने बहला-फुसलाकर अनेक हिन्दुओं का मुसलमान बनाने का प्रयास किया। तत्कालीन मुस्लिम नेताओं की सहायता की बंगाल में हिन्दुओं का कत्लेआम करने में पूर्ण सहायता की।

१४. फिरोजशाह कोटला व रोड—इस मुसलमान अधिकारी ने भी अन्य मुगल शासकों के समान अपने कुरान दीन (मजहब) का पालन किया। कुरान शरीफ में दी गई आयतों जैसे कि-२:३९, २:६७-७१, ३:२८, ४:५६, ५:३३, ३:१४२, ४: २४-२९, ८-१२-१७, २:१९१, ६१:११, ४:९५, ८:७२, ९:५, ९:१४, ९:१११, ९:१२३, ४७:७, ८:६, ४:२९, ५६:१७, १८:२०-२४ के अनुसार पहले तो जन्नत की हूरों, शराब, दूध व शहदवाली नदियों का प्रलोभन दिया। न मानने पर ऊपर की आयतों के अनुसार उनका तथा उनकी गौओं का कत्ल कर दिया।

विशेष : मूल रूप में विचारने की बात यह है कि भारत की राजधानी दिल्ली में देश, धर्म, चरित्र, मानवता तथा संस्कृति के हत्यारों के नाम की सड़कें एवं कालोनियां होनी चाहिएं अथवा देश भक्तों, सन्तों तथा स्वतन्त्रता हित बलिदान करने वालों की? जिन कुरन की आयतों को पढ़कर भारत पर हमले किए, कत्लेआम किए, मन्दिर तोड़े, लाखों हिन्दू गुलाम बनाकर बेचे, नारियां लौंडी बनाईं। देखें कुरानशरीफ अनुवाद मौलाना मु० फारूक और डॉ० मुहमद अहमद सलाम सैन्टर, ६५- पहली मेन रोड, जयनगर ईस्ट, बैंगलोर-१५६००४। फोन-९९४५१७७४७७, ९९४५१८८४८८ (प्रथम संख्या-सूरा, दूसरी-आयत)

१५. तैमूरलंग रोड—यह एक ऐसा क्रूर विदेशी हमलावर था जो लिखता है कि मैंने कुरान से प्रेरणा पाकर भारत के काफिरों पर हमला करने का विचार किया। इस जालिम ने अनेक मन्दिर तोड़े। मुसलमान न बनने पर लाखों लोगों का कत्ल किया। उनके सिरों की ऊँची-नीची मीनारें बनाईं। आर्य-खालसा हिन्दुओं के सिरों को काट-काटकर रस्सी में पिरोकर तोरण जैसे दिल्ली में अनेक द्वार बनाए। ऐसे सब लोगों के नाम पर भारत की राजधानी दिल्ली में सड़कें बनाकर क्या कांग्रेस सेकुलरवादी होने का सच्चा वादा निभा रही है अथवा कुर्सी के प्रलोभन में देश से गद्दारी कर रही है?

महाराणा प्रताप

लेखक - आनन्ददेव शास्त्री, झज्जर

महाराणा प्रताप राणा उदयसिंह के सबसे बड़े बेटे थे। राणा उदयसिंह के सात रानियां थी। इनमें से बड़ी रानी जैवन्तबाई से महाराणा प्रताप का जन्म १५३९ या १५४० में हुआ। राण के जन्म के विषय में भिन्न-भिन्न लेखकों के भिन्न-भिन्न मत हैं। वीरविनोद भाग २ पृ० १६५ पर राणा की जन्मतिथि ३१-५-१५३९ लिखी है। ''नैनसी'' के अनुसार ५-५-१५४० है। श्री परमेश्वरप्रसाद के अनुसार राणा की जन्मतिथि ५-५-१५४० है।

राणा उदयसिंह अपनी सबसे छोटी रानी (सातवें नम्बर की रानी) 'धीरबाई भटियानि' से बहुत प्यार करते थे तथा प्रतापसिंह, जोकि सब तरह राजगद्दी के योग्य थे तथा सभी पुत्रों में बड़े भी थे, के प्रति उपेक्षाभाव रखते थे। मरने से पहले ही उदयसिंह ने राजगद्दी प्रताप को न देकर, भटियानी के बड़े पुत्र जगमल को दे गये थे। मेवाड़ का यह नियम था कि राजगद्दी कभी खाली नहीं रहनी चाहिये। अत: जब सब लोग उदयसिंह के दाह संस्कार पर गये थे तब जगमल राजगद्दी पर बैठा रहा। जब बड़े-बड़े सरदारों को इस बात का पता चला तो उन्होंने सलाह करके, सलुम्बरा नरेश कृष्ण जी चन्दावत, ग्वालियर के पूर्व नरेश, मन्नाझाला आदि ने जगमल को जबरदस्ती हाथ पकड़कर गद्दी से उतार दिया तथा प्रतापसिंह को गद्दी पर बैठा दिया।

इस प्रकार प्रताप का राजतिलक ३२ वर्ष की आयु में १८ फरवरी १५७२ ई० को हुआ माना जाता है। तथा अन्य लेखकों के अनुसार १ मार्च १५६७ ई० में 'गोगुन्दा' में राजतिलक हुआ। राणा प्रताप ने १५६७ ई० में चित्तौड़ त्याग दिया था। राणा प्रताप की शिक्षा दीक्षा १५४१ से १५५४ के मध्य हुई।

१५५९ के मध्य में ही प्रतापसिंह ने 'बांगड़', 'भोमट' तथा 'छप्पन' क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर ली थी। तथा 'गौडवाड' पर भी अधिकार कर लिया था। १५५८ में चित्तौड़ का तीसरा साका (सर्वस्व आहुति) अकबर के आक्रमण के समय हुआ। श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति के मत में चित्तौड़ का साका १५६७ ई० में हुआ था।

जब जगमल को सरदारों ने गद्दी से उतार दिया तो वह अजमेर के मुगल सरदार की शरण में चला गया, मुगल सरदार ने जगमल को जहाजपुर की जागरी दे दी। बाद में जगमल को अकबर ने सिरोही का आधा राज्य दे दिया, अत: सिरोठी के राजा सुल्तान 'देवड़ा' ने जगमल की हत्या कर दी।

राणा प्रताप जब गद्दी पर बैठे उस समय मेवाड़ की स्थिति अच्छी न थी। राजकोष खाली था। सेना तथा शस्त्रों की कमी थी। ऐसी विकट परिस्थिति में भी राणा नहीं घबराए तथा राणा ने मुगलों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। राणा ने प्रतिज्ञा की, ''कि जब तक चित्तौड़ को स्वतंत्र नहीं करा लूंगा, सोने चांदी के बर्तनों में भोजन नहीं करूंगा, पलंग पर नहीं सोऊंगा, राजमहलों के स्थान पर फूस की झोंपड़ी बना, उसी में निवास करूंगा।''

इसी समय राणा ने सामन्तों से सलाह करके, उदयपुर के क्षेत्र को खाली कराने की घोषणा कर दी, तथा कहा इस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति खेती नहीं करेगा, न ही पशु चरायेगा। तथा फसलों को उजाड़ दिया जाये, समस्त जनता कुम्भलगढ़ क्षेत्र में चली जाये जिससें कि शत्रु इस क्षेत्र में पैर न जमा सके। राणा की आज्ञा का पालन तुरन्त हुआ। पूरा प्रदेश वीरान हो गया, इससे मुगलों को बड़ी आर्थिक हानि हुई।

राणा उदयसिंह ने किन्हीं कारणों से अपने पुत्र शक्तिसिंह के वध का आदेश दिया था, इस पर सालुम्ब्रा नरेश ने पुत्राभाव के कारण शक्तिसिंह को मांग लिया था। बाद में सालुम्ब्रा नरेश को पुत्र उत्पन्न हो गया था, अत: प्रतापसिंह ने शक्तिसिंह को वापिस अपने पास कुम्भलगढ़ बुला लिया था।

आश्विन के महीने में राजपूत ''अहेरिया'' नामक उत्सव मनाते हैं तथा जंगल में जाकर सामूहिक रूप से शिकार करते थे। जब राणा आदि शिकार

पर गए तब राणा प्रताप तथा शक्तिसिंह दोनों ही का तीर एक ही सूअर को लगा। सूअर को किसका तीर लगा इस बात पर विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों भाई मरने-मारने पर उतारू होगये। कुल का सर्वनाश देख कुलपुरोहित उन दोनों के बीच में आकर खड़ा होगया तथा न मानने पर उसने अपनी छाती में कटार घोंप ली इससे वह स्वर्ग सिधार गया। यह देख प्रतापसिंह ने शक्तिसिंह को इस घटना का दोषी बताते हुए उसे देश निकाला दे दिया। तब शक्तिसिंह अकबर की शरण में चला गया।

उस समय मेवाड़ की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी, अतः राणा ने सरदारों को आदेश दिया कि "मुगल व्यापारियों के जो काफिले मेवाड़ में से गुजरें, उन्हें लूट लिया जाये।" उससे मेवाड़ की आर्थिक स्थिति सुधरी किन्तु बादशाह अकबर भड़क गया।

अकबर ने १५७२ ई० में मुगल सरदार जलाल खां गोर्ची को दूत बनाकर राणा के पास आधीनता स्वीकार करने के लिये भेजा, किन्तु वह सफल न हो सका। इसके बाद अकबर ने जयपुर के राजा मानसिंह को, जब वह शोलापुर विजय करके आ रहा था, उदयपुर भेजा। किन्तु राणा ने मानसिंह को नीच समझके (स्मरण रहे कि मानसिंह की बुआ जोधाबाई अकबर से ब्याही थी) उसके साथ भोजन नहीं किया तथा कहला भेजा कि मेरे सिर में दर्द है। भोजन पर बड़ा पुत्र अमरसिंह उपस्थित रहा। इस बात से रुष्ट होकर मानसिंह बिना भोजन किये ही उठकर चल पड़ा तथा कहने लगा कि "मैं तुम्हारे पिता के लिये दिल्ली से सिरदर्द की गोली लेकर ही आऊंगा।" तब एक सरदार ने मानसिंह पर व्यंग मारा कि दिल्ली से आते समय अपने फूफा अकबर को भी साथ लेते आना। यही घटना ही मुख्यरूप से हल्दीघाटी के युद्ध का कारण मानी जाती है।

इसके बाद अक्तूबर १५७३ में अकबर ने जयपुर के भगवानदास को भी अहमदाबाद विजय के समय अपनी शर्तें मनवाने राणा के पास भेजा। किन्तु वह भी उद्देश्य में असफल रहा।

इसके बाद दिसम्बर १५७३ में ही अकबर ने राजा टोडरमल को गुजरात से लौटते समय शर्तें मनवाने के लिये राणा के पास भेजा, किन्तु वह भी इस काम में सफल न हुआ।

अन्त में १५७४ में बंगाल से निपटकर तथा १५७६ में जोधपुर के चन्द्रसेन को हराकर अकबर ने राणा से युद्ध की योजना बनाई।

इस कारणों के अतिरिक्त राणा के सैनिकों ने पुर्तगीज हीरों के व्यापारी, जो कि अकबर को हीरे भेंट करने जा रहा था, लूट लिया था। इन कारणों से हल्दीघाटी के युद्ध का सूत्रपात हुआ।

हल्दीघाटी का युद्ध - जब अकबर के भेजे हुये दूतों से भी महाराणा प्रताप नहीं माने तब अकबर ने एक बड़ी सेना मानसिंह के नेतृत्व में जिसमें सलीम, मोहब्बत खां, शक्तिसिंह, सागर सिंह का विधर्मी पुत्र आसफ खां (चित्तौड़) सैय्यद अहमद, मेहतार खां, सैय्यद हाशिम बरहा, जगन्नाथ कछवाहा (आमेर) तथा रामलून मुख्य योद्धा थे। दिल्ली से अजमेर भेजी। १३ अप्रैल १५७६ को यह सेना अजमेर से मेवाड़ को चली। मांडलगढ़ पहुंचकर मानसिंह की सेना ने, दो महीने मेवाड़ की सेना की निगरानी की, परन्तु मानसिंह को समझ में न आया कि हमला किधर से करे।

इधर अकबर की सेना की सूचना मिलते ही राणा ने भी युद्ध की तैयारियां आरम्भ कर दी। प्रताप की सेना में ग्वालियर का रामसिंह तंवर, कृष्णदास चूडावत, रामदास राठौर, झाला मानसिंह रावत, पुरोहित गोपीनाथ, शंकरदास, पुरोहित जगन्नाथ, केशव, हकीम खां सूर, भीमसिंह डोडिया, जगमल का पुत्र रामदास, बीदा का माना तथा भामाशाह आदि प्रमुख सरदार थे।

राणा ने मेवाड़ का मध्यक्षेत्र खाली करवा दिया था, प्रजा कुम्भलगढ़ के पास केलवा में चली गई थी। राणा ने जोशीमुनो के नेतृत्व में ३०० सैनिक, हल्दीघाटी के मुहाने पर मुगलों को रोकने के लिये

नियुक्त किये थे। अब राणा ने ''लोहसिंह'' गांव के पास पड़ाव डाला। उधर मुगल सेना मांडलगढ़ से चलकर खामनेर के पास ''मौलेला'' पहुंची। यह स्थान बनास नदी के किनारे स्थित था। राणा ने अपनी सेना को चार भागों में रखा तथा स्वयं मध्य में स्थित रहे तथा भील सरदार ''पुंजा'' को पहाड़ियों पर से बाण बरसाने के लिये नियुक्त किया। जब मानसिंह की सेना पास में आई तो राणा की सेना भी घाटी से बाहर आगई तथा हरावलदस्ते के नेता हकीम खांसूर ने मुगलसेना पर ऐसा भयंकर हमला किया कि मुगल सेना आगे होकर भागने लगी तथा मुगल हारते दिखाई दिये। किन्तु बरहा का सैय्यद मेवाड़ी लड़ता रहा। इतने में हतार खां आ पहुंचा तथा उसने झूठी घोषणा करदी कि अकबर एक बड़ी सेना लेकर स्वयं सहायता के लिये आ पहुंचा है। यह सुनकर मुगलों के भी पैर जम गये तथा युद्ध भयंकर हो उठा। एक तो मुगल सेना राजपूतों से बहुत बड़ी थी ऊपर से उनके पास तो तोपखाना भी था, अत: राजपूत घिरकर मरने लगे। उसी समय राणा की नजर हाथी पर बैठे मानसिंह पर पड़ी। राणा ने घोड़े को एड लगाई तथा चेतक ने अगले पैर हाथी पर टिका दिये। तभी राणा ने एक भरपूर वार भाले का मानसिंह पर किया, जिससे मानसिंह का महावत मारा गया तथा मानसिंह हाथी के ओधे में लेटकर बच गया। मानसिंह के हाथी ने सूंड से तलवार चेतक के अगले पैर पर मारी, जिससे चेतक का अगल पैर बुरी तरह से घायल हो गया। तभी मुगलों ने राणा को बुरी तरह घेर लिया। यह देखकर झालामन्ना ने राणा का मुकुट अपने सिर पर रख लिया, मुगलों ने झाला को राणा समझ चारों तरफ से घेर लिया तथा मार डाला। घायल राणा युद्ध क्षेत्र से जब बाहर आने लगा तभी दो मुगलों की दृष्टि राणा पर पड़ी तथा वे राणा को मारने के लिये राणा के पीछे चल पड़े। यह दृश्य दूर खड़ा शक्तिसिंह देख रहा था, उसमें भ्रातृप्रेम उमड़ पड़ा अत: वह उन दोनों मुगलों के पीछे-पीछे चल पड़ा तथा उन दोनों मुगलों को गोली से मार दिया। उधर घायल होने के बावजूद चेतक राणा को लेकर पहाड़ी नाले को कूद गया तथा कुछ दूर चलते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये। जिस राणा के बड़ी-बड़ी आपत्तियों में भी आंसू नहीं आये थे, चेतक की मृत्यु पर उसी राणा की आंखों में आंसू आगये। बाद में राणा ने उस स्थान पर चेतक का छोटा-सा स्मारक बनाया जो अभी भी विद्यमान है। स्मरण रहे कि अब वह नाला समाप्त होगया है। सन् १९९२ तक इसमें पानी चलता था। अब इसके स्थान पर एक सुन्दर दृश्य-श्रव्य स्मारक बना दिया गया है।

शक्तिसिंह ने राणा के पैर पकड़कर क्षमा मांगी तथा अपना घोड़ा राणा को दे दिया और वापिस मानसिंह की सेना में चला गया।

यह युद्ध ५-६ घंटे तक चला तथा दोनों पासों की भारी जन-धन की हानि हुई। किन्तु हार-जीत किसी की नहीं हुई।

इधर युद्ध के बाद राणा ईडर (गुजरात) में कोल्यारी गांव पहुंचे। यहीं सब लोगों ने इकट्ठे हो लाभ-हानि का हिसाब लगाया तथा घायलों का इलाज हुआ।

उधर हल्दीघाटी से चलकर मानसिंह गोगुन्दा पहुंचा तथा वहीं सेना मुख्यालय बनाया और गोगुन्दा के चारों तरफ ऊंची दीवारें बनवादी और गहरी खाई खुदवादी जिससे राणा के हमले का भय न रहे। किन्तु राणा का भय उन्हें हर समय सता रहा था अत: मुगल अपनी जेल में ही कैद होगये क्योंकि उनकी सहायता के सभी मार्ग राणा ने बंद कर दिये थे। अन्न के अभाव में मुगलों ने आम तथा मांस खाया, जिससे बहुत से मुगल बीमार हो गएँ तब विवश मानसिंह को गोगुन्दा में चौकी स्थापित कर वहां से भागना पड़ा। मानसिंह के जाते ही राणा ने गोगुन्दा पर अधिकार कर लिया। स्मरण रहे कि हल्दीघाटी के युद्ध के बाद राणा ने छापा मार युद्ध पद्धति अपना ली थी।

इसके बाद राणा कुम्भलगढ़ के किले में रहने लगे, किन्तु वहां भी उन्हें मुगलों ने आ घेरा, किन्तु वे कुम्भलगढ़ पर कब्जा न कर सके। तभी आबू के राजा देवड़ा (देवराज) ने मुगलों को बता दिया कि कुम्भलगढ़ में ''नागन'' नाम का एक ही जलस्रोत है। मुगलों ने उस स्रोत में जहर मिल दिया। तब राणा को कुम्भलगढ़ छोड़ना पड़ा।

युग पुरुष स्वामी दयानन्द कौन थे?

— कन्हैयालाल आर्य,
कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

"मैं सादर प्रणाम करता हूं उस महागुरु दयानन्द को, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्म-गाथा में सत्य और एकता का बीज देखा। जिसकी प्रतिभा ने भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व विषयक अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता के जागृति लोक में लाना था। उस गुरु को मेरा बारम्बार प्रणाम है।" ये ज्वलन्त शब्द विश्वकवि रविन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा अभिव्यक्त अपने एक ऋषिकल्प युग पुरुष के प्रति अर्पित नवीन भारत की श्रद्धांजलि के प्रतीक हैं।

वास्तव में महर्षि दयानन्द हमारी आत्मा के बन्धनों को काटने आये थे। महर्षि दयानन्द का हमारे इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है। उन्होंने हिन्दू धर्म को मध्य युग की धार्मिक कूपमण्डूकता और पुरोहित तन्त्र के चंगुल से छुटकारा दिलाने का सबसे सबल प्रयास किया था। अंधविश्वास, महन्त, मठाधीश एवं पण्डे पुजारी के जंजाल में उलझे हुए भारतीय समाज को एक नया प्रकाश देकर, उन्होंने उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का सबल प्रयास किया था।

जैसे चमकने वालों में सूर्य, हाथियों में ऐरावत, भौतिक पदार्थों में रत्न, वीरों में जामदग्न्य, आदर्श पुरुषों में राम, नीतिज्ञों में चाणक्य, योगेश्वरों में कृष्ण तथा शीतलतत्त्वों में चन्द्रमा को निराला माना जाता है। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द भी एक निराला व्यक्ति है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवनकाल में सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके तत्कालीन समाज की स्थिति को देखा तो पाया कि लोग बहुदेवतावाद, जड़ पूजा, छुआछूत, बाल-विवाह, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष, जादू टोना, पशु बलि, मद्य, मांसाहार आदि अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रस्त है। ईश्वर के नाम पर अनेक स्वयंभू ईश्वर बनकर जनता को पतन की ओर ले जा रहे थे। भारतीय समाज की जीवनपरम्परा ईश्वरोक्त वैदिक धर्म से लगभग भिन्न हो चुकी है। लोग वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि आर्षग्रन्थों में वर्णित सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, निराकार ईश्वर से भिन्न कपोलकल्पित मिथ्या देवी, देवताओं की पूजा कर रहे है। स्त्री जाति पर भारी अत्याचार हो रहे हैं। स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है। नारी ही नरक का द्वार है ऐसी अवैदिक मान्यताओं को समाज में प्रचारित कर समाज को पीड़ित किया हुआ है। बाल विवाह, बहु विवाह एवं विधवाओं पर अत्याचारों से समाज में हाहाकर मच रहा था।

ऐसे अंधकार के समय परमेश्वर की अपार कृपा से युग ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने अवैदिक मिथ्या मान्यताओं के प्रचलन से समाज और राष्ट्र में होने वाली अनेक प्रकार की हानियों तथा कुपरिणामों को देखकर समाज में पुनः विशुद्ध वैदिक मान्यताओं की स्थापना करने का मन में दृढ़ संकल्प किया। विश्व को ईश्वर के सत्य स्वरूप का दिग्दर्शन कराया और उद्घोष किया कि एक ईश्वर के पुत्र होने के नाते हम सब भाई हैं। महर्षि का स्वप्न था कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दुःख और अशान्ति से छूटकर सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त करे। मानव को मानव से अलग करने वाली साम्प्रदायिक दीवारों को वे समाप्त करना चाहते थे।

मेरा प्यारा दयानन्द सब बातों में निराला था। गुरु बना, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाजपतराय तथा श्याम कृष्ण वर्मा जैसे अनूठे शिष्य उत्पन्न किये जिन्होंने राष्ट्र और समाज की अनथक

सेवा की। शिष्य बने और ऐसे समर्पित कि गुरु को कहना पड़ा ''दयानन्द! मुझे आपका जीवन चाहिये। राष्ट्र एवं समाजहित में तुम्हारे जीवन की आहुति चाहता हूं।'' गुरु के इस पवित्र वाक्य को जीवन का आदर्श मानकर आजीवन निभाया। गुरुडम नहीं चलाया। सन्तत्व में, त्याग में, तपस्या में, वैराग्य में, योगियों में, समाज सुधारकों में, वेद भाष्यकारों में, ब्रह्मचारियों में, युग प्रवर्तकाओं में, जीने वालों में, मरने वालों में आपका निरालापन समाज को प्रेरणा देता रहा है।

महर्षि दयानन्द जी के उपकारों को गिना तो नहीं जा सकता। परन्तु उनके मुख्य कार्यों में ईश्वर के सच्चे स्वरूप की स्थापना, यज्ञप्रणाली को पुनःस्थापित करना, वेदप्रचार, स्वराज्य के पुनरुद्धारक, गोरक्षक, अछूतों के सच्चे सुधारक, हिन्दी भाषा के सच्चे हितैषी, अनाथों के रक्षक एवं सार्वभौमक धर्म के प्रचारक के रूप में आपके योगदान को पूरा विश्व जानता है। परन्तु स्त्री जाति के प्रति आप के किए गए उपकारों को भुलाना तो कृतघ्नता होगी। महर्षि के प्रचारकार्य से पूर्व स्त्री जाति को पांव की जूती माना जाता था। यदि वह विधवा हो जाती थी उसे आयुपर्यन्त ठण्डे सांस भर के जीवन व्यतीत करना पड़ता था। ''ढ़ोल, गंवार, शूद और नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी'' कहकर नारी को अपमानित किया जाता था। ऋषि दयानन्द जी ने महर्षि मनु के कथनानुसार ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'' जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते है, की घोषणा करके नारी जाति पर बड़े उपकार किये। कन्याओं की छोटी आयु में विवाह कर दिये जाते थे। बूढ़ों के साथ विवाह कर उन्हें विधवा बनाकर समाज में अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश किया जाता था। बालविवाह का विरोध कर युवावस्था में विवाह का प्रचार किया। कन्याओं की शिक्षा पर बल दिया, उन्हें घूंघट एवं पर्दे से बाहर निकाला। आज ईश्वर कृपा से नारियां मैजिस्ट्रेट, डॉक्टर, वकील, अध्यापिका, प्रशासनिक अधिकारी, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तक बन रही हैं। स्वामी जी के उपकारों को स्त्री जाति कभी भी नहीं भुला सकती।

आज केवल भारत ही नहीं, सारे धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक संसार पर महर्षि दयानन्द का सिक्का है। विभिन्न मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल दिये हैं। धर्मपुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है। दलितोद्धार का प्रण, समाज सुधार की जान, आदर्श सुधारक शिक्षा प्रचारक, वैदिक मान्यताओं का पुनःस्थापक, स्त्री जाति का सच्चा हितैषी, गोमाता का सच्चा रक्षक, करुणानिधि दयानन्द जी के जीवन से हम प्रेरणा लें।

आओ! हम अपने आपको ऋषि दयानन्द के रंग में रंगें। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आधार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो, हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो, तभी हम एक स्वर से पुकार सकेंगे।

पापों और पाखण्डों से ऋषिराज छुड़ाया था तूने।
भयभीत निराश्रित जाति को निर्भीक बनाया था तूने।
बलिदान तेरा था अद्वितीय हो गई दिशायें गुंजित थी।
जन जन को देगा प्रकाश वह दीप जलाया था तूने।

अन्त में यह निवेदन करना चाहता हूं आर्यो! उठो! जागो! अपने को सम्भालो। अपने स्वरूप को देखो। जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज रूपी पवित्र संगठन को खड़ा किया था, उनकी पूर्ति के लिए व्रती तथा संकल्पी बनो। संसार हमारी ओर देख रहा है। वैचारिक चिन्तन आर्यसमाज की सबसे बड़ी सम्पदा है। हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें ऋषि दयानन्द जैसा पुण्यात्मा प्रभुभक्त, सत्यज्ञान का प्रेरक मार्गदर्शक मिला है।

—४/४५, शिवाजी नगर, गुड़गांव
मो० ०९९१११९७०९३

अंग्रेजों के आगमन से पहले भारत में शिक्षा और उद्योगधन्धों की अवस्था

-प्रस्तुतकर्ता : श्री के.सी. श्रीवास्तव

अंग्रेजों के आगमन से पहले सार्वजनिक शिक्षा और विद्याप्रचार की दृष्टि से भारत संसार के अग्रतम देशों की श्रेणी में गिना जाता था। आज से केवल २०० वर्ष पहले यूरोप के किसी भी देश में शिक्षा का प्रचार इतना अधिक न था जितना भारतवर्ष में, और न कहीं भी प्रतिशत जनसंख्या की दृष्टि से पढ़े-लिखों की संख्या इतनी अधिक थी। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व यहां जनसामान्य को शिक्षा देने के लिए मुख्य रूप से चार प्रकार की संस्थायें थीं-

१. असंख्य ब्राह्मण आचार्य अपने-अपने घरों पर अपने शिष्यों को शिक्षा देते थे।

२. अनेक मुख्य-मुख्य नगरों में उच्च संस्कृत साहित्य की शिक्षा के लिए 'टोल' या विद्यापीठ विद्यमान थे।

३. उर्दू और फारसी की शिक्षा के लिये जगह-जगह मकतब और मदरसे थे, जिनमें लाखों हिन्दू और मुसलमान बालक शिक्षा पाते थे।

४. इन सबके अतिरिक्त देश के प्रत्येक छोटे से छोटे ग्राम में ग्राम के समस्त बालकों की शिक्षा के लिये कम से कम एक पाठशाला होती थी। जिस समय तक कि ईस्ट इंडिया कंपनी ने आकरभारत की सहस्रों वर्षों की पुरानी ग्राम-पंचायतों को नष्ट नहीं कर डाला उस समय तक ग्राम के समस्त बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करना प्रत्येक ग्राम-पंचायत अपना आवश्यक कर्त्तव्य समझती थी और सदैव उसका पालन करती थी।

इंग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट के प्रसिद्ध सदस्य केर हार्डी ने अपनी पुस्तक "इण्डिया" में लिखा है-

"मैक्समूलर ने, सरकारी उल्लेखों के आधार पर और एक मिशनरी रिपोर्ट के आधार पर (जो बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार होने से पहले वहां की शिक्षा की अवस्था के सम्बन्ध में लिखी गई थी) लिखा है कि उस समय बंगाल में ८०,००० देशी पाठशालायें थीं, अर्थात् क्षेत्र की जनसंख्या के हर चार सौ मनुष्यों के पीछे एक पाठशाला विद्यमान थी।" इतिहास के लेखक लुडलो को उद्धृत करते हुए हार्डी पुनः लिखते हैं कि- "प्रत्येक ऐसे हिन्दू गांव में, जिसका कि पुराना संगठन अभी तक कायम है मुझे विश्वास है कि आमतौर पर सब बच्चे लिखना पढ़ना और हिसाब करना जानते हैं किन्तु जहां कहीं भी हमने ग्राम पंचायत का नाश कर दिया है, जैसे बंगाल में, वहां ग्राम पंचायत के साथ-साथ गांव की पाठशाला भी लुप्त हो गई है।"

भारतीय शिक्षा के विषय में प्रोफेसर मैक्समूलर एवं लुडलो के विचारों से ज्ञात होता है कि विभिन्न उत्थान-पतनों के पश्चात् भी अंग्रेजों के आगन से पूर्व भारत में शिक्षा की स्थिति ठीक थी। शिक्षा की यह समुचित व्यवस्था नगरों में ही नहीं अपितु ग्रामों में भी विद्यमान थी। ग्रामों में बसने वाला कृषक समाज भी अन्य देशीय किसानों की तुलना में अधिक शिक्षित था।

प्राचीन भारत में शिक्षा का प्रचार

प्राचीन भारत में ग्रामवासियों के शिक्षा के सम्बन्ध में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सन् १८२३ की एक सरकारी रिपोर्ट में लिखा है-

"शिक्षा की दृष्टि से संसार के किसी भी अन्य देश में किसानों की अवस्था इतनी ऊंची नहीं है जितनी ब्रिटिश भारत के अनेक भागों में।"

भारतीय शिक्षाप्रणाली

यह दशा तो उस समय शिक्षा के विस्तार की थी, अब रही शिक्षा देने की प्रणाली। इतिहास से पता चलता है कि उन्नीसवीं सदी के शुरू में डॉक्टर एण्ड्रू बेल नामक एक प्रसिद्ध अंग्रेज शिक्षाप्रेमी ने इस देश से इंग्लैंड जाकर वहां अपने देश के बालकों को भारतीय प्रणाली के अनुसार शिक्षा देना प्रारम्भ किया। ३ जून १८१४ को कम्पनी के डॉयरेक्टरों ने बंगाल के गवर्नर जनरल के नाम एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा है- "शिक्षा की पद्धति बहुत पुराने समय से भारत में वहां के आचर्यों के अधीन जारी है उसकी सबसे बड़ी प्रशंसा यही है कि रेवरेण्ड डॉक्टर बेल के अधीन, जो

मद्रास में पादरी रह चुका है, वही पद्धति इस देश इंगलैंड में भी प्रचलित की गई है, अब हमारी राष्ट्रीय संस्थाओं में इसी तरीके के अनुसार शिक्षा दी जाती है, क्योंकि हमें विश्वास है कि इससे भाषा का सिखाना बहुत सरल और सीखना बहुत सुगम हो जाता है।''

''कहा जाता है कि हिन्दुओं की इस अत्यन्त प्राचीन और लाभदायक संस्था को सल्तनतों के उलटफेर भी कोई हानि नहीं पहुंचा सके।''

आजकल की पाश्चात्य शिक्षाप्रणाली में जिसको ''म्यूचुअल ट्यूशन'' कहा जाता है वह पश्चिम के देशों में भारत से ही सीखी थी।

भारत के जिस-जिस प्रान्त में कम्पनी का शासन जमता गया उस-उस प्रान्त से ही यह सहस्रों वर्ष की पुरानी शिक्षा प्रणाली सदा के लिये मिटती चली गयी। ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन से पहले भारत में शिक्षा की अवस्था और कम्पनी का पदार्पण होते ही एक सिरे से उस शिक्षा के सर्वनाश, इन दोनों का कुछ अनुमान बेलारी जिले के अंग्रेज कलेक्टर ए.डी. कैम्पबेल की सन् १८२३ की एक रिपोर्ट से किया जा सकता है। कैम्पबेल लिखता है- ''जिस व्यवस्था के अनुसार भारत की पाठशालाओं में बच्चों को लिखना सिखाया जाता है और जिस ढंग से ऊंचे दर्जे के विद्यार्थी नीचे दर्जे के विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं और साथ-साथ अपना ज्ञान भी पक्का करते हैं वह समस्त प्रणाली निस्संदेह प्रशंसनीय है और इंगलिस्तान में उसका जो अनुकरण किया गया है उसके सर्वथा योग्य है।''

भारतीय शिक्षा की अवनति के कारणों का उल्लेख करते हुए कैम्पबेल ने लिखा है- ''इस समय असंख्य मनुष्य ऐसे हैं जो अपने बच्चों को इस शिक्षा का लाभ नहीं पहुंचा सकते।''

मुझे कहते हुए दु:ख होता है कि इसका कारण यह है कि समस्त देश धीरे-धीरे निर्धन होता जा रहा है। हाल में जबसे हिन्दुस्तान के बने हुए सूती कपड़ों की जगह इंग्लैंड के बने हुए कपड़ों को इस देश में प्रचलित किया गया है तबसे यहां के कारीगरों के लिए जीविका निर्वाह के साधन बहुत कम हो गए हैं। हमने अपनी बहुत-सी पलटनें अपने इलकों से हटकार उन देशी राजाओं के दूर-दूर के इलाकों में भेज दी हैं, जिनके साथ हमने संधियां की हैं, हाल ही में इससे भी अन्न की मांग पर बहुत बड़ा असर पड़ा है। देश का धन पुराने समय के देशी दरबारों ओर देशी कर्मचारियों के हाथों से निकलकर यूरोपियनों के हाथों में चला गया है। देशी दरबार और उनके कर्मचारी उस धन को भारत ही में उदारता के साथ व्यय किया करते थे, इसके विपरीत नए यूरोपियन कर्मचारियों को हमने कानूनन आज्ञा दे दी है कि वे अस्थाई तौर पर भी इस धन को भारत में व्यय न करें। वे यूरोपियन कर्मचारी देश के धन को प्रतिदिन ढो-ढोकर बाहर ले जा रहे हैं, इसके कारण भी यह देश दरिद्र होता जा रहा है। सरकारी लगान जिस कड़ाई के साथ वसूल किया जाता है उसमें भी किसी तरह की ढिलाई नहीं की गई, जिससे प्रजा के इस कष्ट में कोई कमी हो सकती। मध्यम श्रेणी और निम्न श्रेणी के अधिकांश लोग अब इस योग्य नहीं रहे कि अपने बच्चों की शिक्षा का खर्च बर्दाश्त कर सकें, इसके विपरीत ज्योंही उनके बच्चों के कोमल अंग थोड़ी बहुत मेहनत कर सकने के योग्य होते हैं, माता-पिता को अपनी जिंदगी की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए उन बच्चों से अब मेहनत मजदूरी करानी पड़ती है।''

इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू में भारत की प्राचीन सार्वजनिक शिक्षाप्रणाली के नाश का एक मुख्य कारण यह था कि प्राचीन भारतीय उद्योग धंधों के सर्वनाश, कंपनी की लूट और अत्याचारों के कारण देश उस समय तेजी के साथ निर्धन होता जा रहा था और देश के उन करोड़ों नन्हें नन्हें बालकों को जो पहले पाठशालाओं में शिक्षा पाते थे, अब अपना और अपने मां बाप का पेट भरने के लिए मेहनत मजदूरी में मां बाप का हाथ बटाना पड़ता था।

अपने से पहले की हालत और अपने समय की शिक्षा की हालत की तुलना करते हुए कैम्पबेल लिखता है- ''इस जिले की करीब दस लाख आबादी में से इस समय सात हजार बच्चे भी शिक्षा नहीं पा रहे हैं, जिससे पूरी तरह जाहिर है कि शिक्षा में निर्धनता

के कारण कितनी अवनति हुई है। बहुत से ग्रामों में जहां पहले पाठशालाएं मौजूद थीं, वहां अब कोई पाठशाला नहीं है और बहुत से अन्य ग्रामों में जहां पहले बड़ी-बड़ी पाठशालाएं थीं वहां अब केवल अत्यंत धनाढ्य लोगों के थोड़े से बालक शिक्षा पाते हैं, दूसरे लोगों के बालक निर्धनता के कारण पाठशाला नहीं जा सकते।''

''इस जिले की अनेक पाठशालाओं की जिनमें देशी भाषाओं में लिखना, पढ़ना और हिसाब सिखाया जाता है, जैसा कि भारत में सदा से होता रहा है। विद्या कभी किसी भी देश में राजदरबार की सहायता के बिना नहीं बढ़ी और भारत के इस भाग में विज्ञान को देशी दरबारों की ओर से पहले जो सहायता और उत्तेजना दी जाती थी परन्तु इस समय यह दशा है कि अंग्रेजी राज के आने के समय से बहुत दिन हुए वह सहायता बंद कर दी गई है।''

''इस जिले में अब घटते घटते शिक्षा संबंधी ५३३ संस्थाएं रह गई हैं और मुझे यह कहते हुए लज्जा आती है कि इनमें से किसी एक को भी अब सरकार की ओर से किसी तरह की सहायता नहीं दी जाती।'' (क्रमशः)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार हुए ''उत्तराखण्ड रत्न'' से सम्मानित

'आल इंडिया कांफ्रेंस आफ इंटेलक्चुअल्स' नामक बुद्धिजीवियों की संस्था की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड रत्न' से सम्मानित किया गया।

रविवार दिनांक 20.04.2014 को बड़ोवाला देहरादून में आर.के. इंडिया ग्राट स्थित एक होटल में आयोजित किये गये एक विशेष कार्यक्रम में कुलपति को 'धर्म एवं संस्कृति' के क्षेत्र में तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में उल्लेखनीय प्रगति एवं समाज सेवा के लिए विशिष्ट कार्य करने पर यह सम्मान दिया गया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल श्री के०एम० सेठ एवं उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस श्री राजेश टंडन से 'उत्तराखण्ड रत्न' सम्मान प्राप्त करते हुए।

इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार को माल्यार्पण के अतिरिक्त अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह तथा एक प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित करने वाली हस्तियां थीं- छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल श्री के.एम. सेठ, उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस श्री राजेश टंडन, डॉ. एस. फारूख देहरादून आदि।

संस्था के सह-अध्यक्ष आर.सी. दीक्षित पूर्व डी.जी.पी. (पुलिस) तथा राष्ट्रीय सैकेट्री जनरल पी.एन. शर्मा, सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट का कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा। इस एन.जी.ओ. के अध्यक्ष श्री जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति (पूर्व चुनाव आयुक्त) हैं।

उल्लेखनीय है कि कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार का आर्य समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के अतिरिक्त 'मनुस्मृति' पर विशिष्ट कार्य है। उन्होनें मनुस्मृति की प्रासंगिकता तथा महत्ता पर विशिष्ट कार्य कर समाज को यह संदेश दिया है कि मनुस्मृति ही एक ऐसा ग्रन्थ है जो सामाजिक समरसता तथा सामाजिक सुदृढ़ न्याय व्यवस्था को बताता है। उन्होंने मनु तथा मनुस्मृति पर हुए एक अनेक संदेहास्पद तथा प्रहारात्मक विवादों को सरलता से सुलझाया है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने वैदिक धर्म एवं संस्कृति पर भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। व्याख्यानों तथा टी.वी. वार्ताओं के माध्यम से भी उन्होंने मनुस्मृति-समीक्षा की है तथा स्वामी दयानन्द एवं स्वामी श्रद्धानन्द के कृत्कार्यों की महत्ता को उजागर किया है।

देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में बैंगलोर से आए सीनियर एडवोकेट शिव शेखरन, लखनऊ के एस.के. गर्ग, मुरादाबाद के डॉ. ए.के. सिंह, एम्स के डॉ. राजकुमार, सीनियर एडवोकेट सुभाष माहेश्वरी, ए.के. शर्मा, पी.के. जैन, एच.एन. शर्मा, ए.के. अग्रवाल, डी.डी. शर्मा, बाबूराम बालियान, हेमन्त अरोड़ा, करण मल्होत्रा, एस.के. शर्मा तथा अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस्लामी शासन के कारनामे

❑ पं० बिहारीलाल, शास्त्रार्थ महारथी

हजरत मुहम्मद साहब इस्माइल मत प्रवर्तक हैं। इनके ऊपर यहूदी और ईसाइयों का पूरा प्रभाव पड़ा था।

ईसाई साधु ''बहीरा'' जो कि बसरे का निवासी था। उसी के प्रभाव से यह अपने पैत्रिक मूर्तिपूजक मत को छोड़कर निराकारोपासक तथा एकेश्वरवादी बने थे।

इन्होंने भी हजरत इब्राहीम, हजरत मूसा, हरत दाऊद, सुलेमान आदि यहूदी पैगम्बरों तथा राजाओं को अपना मान्य बुजुर्ग माना है। इन महानुभावों की शिक्षा और शासन नीति कैसी थी, इसको बाइबल में भलीभांति देखा जा सकता है। मार-काट और नगरों का भस्म करना अपने से विरुद्ध मतवालों का संहार छलबल से करना बाइबिल में यत्र-तत्र मिलेगा।

एक उदाहरण यहां देना पर्याप्त है—

'तब यहोशू (एक पैगम्बर और नेता) ने लोगों से कहा—'जय जयकार करो क्योंकि यहोबा ने यह नगर (पेलस्टायन का यही हो नगर) तुम्हें दे दिया है। और नगर ओर जो कुछ उसमें हैं सो महोबा के लिए अर्पण की वस्तु ठहरेगा। केवल राहाल वेश्या और जितने उसके घर में हों, वे जीते रहेंगे। क्यांकि उसने हमारे भेजे हुए दूतों को छिपा रक्खा था। और तुझे अर्पण की वस्तुओं से बड़ी सावधानी करके अलग रहो ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर पीछे अर्पण की वस्तुओं से कुछ ले लो और इस भांति इस्राएली छावनी को भी अर्पण की वस्तु बनाकर उसे नष्ट कर डालो। सब चाँदी सोना और जो पात्र पीतल और लोहे के हों सो यहोबा के लिए पवित्र ठहरा के उसी के भंडार में रक्खे जायें।

तब लोगों ने जय-जयकार किया और याजक नरसिंह फूंकते रहे और जबाले ने नरसिंह का शब्द सुनकर बड़ी ही ध्वनि से फिर जय-जयकार किया तब शहरपनाह नेब से गिर पड़ी। और लोग अपने-अपने सामने नगर में चढ़ गये, और नगर को ले लिया और क्या पुरुष क्या स्त्री क्या जवान क्या बूढ़े वरन बैल, भेड़, बकरी गधे जितने नगर में थे उन सबों को उन्होंने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला''। (बाइबिल यहोशू) अब कहिये इस बर्बरता का कुछ ठिकाना है?

ऐसी ही शिक्षा और संस्कृति से प्रभावित इस्लाम है। जो यहूदियों ने फलस्तीन आदियों के साथ व्यवहार किया वही मुसलमानों ने यहूदी आदि जातियों के साथ किया। यहूदी अपने शासन में अन्य धर्मवालों को नष्ट करते रहे तो मुसलमानों ने भी बलिष्ठ होकर ऐसा ही किया सैमेटिक मतों की यही परम्परा रही है। परन्तु आर्य जाति के इतिहास में ऐसी भ्रष्टता नहीं मिलेगी।

जब हजरत मुहम्मद साहब ने मुस्लिम समुदाय को दृढ़ कर लिया। तब आस-पास के यहूदी और ईसाईयों के प्रति वही नीति प्रारम्भ की। जो हज़रत मूसा के अनुयायियों ने पेंलस्टाइनवासियों के संग की थी। उनके नगर लूटे गये स्त्रियां अपहृत की गईं। सफ़िया नामक यहूदी स्त्री जो हज़रत मुहम्मद की पत्नियों में से एक थीं वे इसी प्रकार अपहृत करके लाई गई थीं।

इस वध, अपहरण लूटमार का परिणाम यह हुआ कि जब बाहरवाले सामने न होते थे तो मुसलमानों के तीन ख़लीफ़ा - उमर, उस्मान और अली मुसलमानों के ही हाथ से मारे गये। अली जैसे योग्यतम व्यक्ति का वध धोखे से किया गया। हजरत अली मुहम्मद साहब के चचेरे भाई, दामाद और अनन्य भक्त तथा इस्लाम धर्म स्थापना में विशेष सहकारी थे। और इनका विरोधी मुआबिया सब षड्यंत्र की जड़ था। मुआबिया शाम का खलीफा था। आगे इसका पुत्र मजीद खलीफा बना। इसने हजरत मुहम्मद के वंश को मिटाने की ठानी। हजरत अली के पुत्र इमाम हसन को इसने षड्यंत्र करके मरवा डाला। तत्पश्चात् हसन के भाई इ०मुस्लिम और इमाम हुसेन का वध भी इसी के षड्यंत्र से हुआ। मजीद निष्कटंक इस्लामी धर्मगुरु और शासक रहना चाहता था। हजरत अली के वशंधरों

के होते हुए धर्मगुरु न बन सकता था। और बिना धर्म नेता बने राजशासक भी रहने में संदेह था, क्योंकि इस्लामी मत में धर्म और राज्य का नेता पृथक्-पृथक् नहीं, जैसा कि आर्य धर्म में है। धर्मगुरु ब्राह्मण और राज्यनेता क्षत्रिय होते हैं। 'अन्ततो गत्वा' मजीद ने हजरत मुहम्मद के प्यारे दौहित्र और हजरत अली के प्यारे पुत्र हुसेन महोदय का ''कर्बला'' में निष्करुण वध करा डाला। इनकी स्त्रियों को अपमान के साथ पैदल मलिन वेश में मजीद के सामने उपस्थित किया गया। हज़रत हुसेन जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सिर भालों पर टाँग कर घुमाये गये। इनके पुत्र इ०जैनुल्ल आब्दीन की कैदियों के समान गिरफ्तार करके मजीद के दरबार में पेश किया गया। यह सब कारनामे मुसलमानों द्वारा ही सम्पादित हुए।

इससे भी अधिक दानवता को भी लज्जानेवाली एक घटना कर्बला के मैदान की है।

कर्बला की मरुभूमि में जब हजरत हुसेन के साथियों की मजीद की सेना ने घेर लिया और उनका पानी बंद कर दिया तो उनके सब साथी प्यास से तड़पने लगे। तब हज़रत हुसेन ने अपने छोटे से बच्चे अली असग़र को गोद में लेकर मजीद के सैनिकों से एक दर्दभरी अपील की। यह बालक शत्रु मित्र का भेद नहीं जानता। प्यास से यह तड़प रहा है। मैं इसे भूमि पर छोड़कर दूर चला जाता हूँ। तुम इसे दो चुल्लू पानी पिलादो। इसका उत्तर मुसलमान सैनिकों ने यह दिया, कि हुर्मिला नाम के एक मुसलमान सैनिक ने ताक कर बच्चे के गले में तीर मारा जिससे बच्चा तत्काल परलोक सिधार गया।

यह व्यवहार था मुसलमानों का अपने नबी के दौहित्र और वंशधर इमाम हुसेन के साथ।

ऐसी क्रूर दानवीय संस्कृति में पला हुआ इस्लाम उस दया को, जो कि आर्यसाहित्य में है, क्या अनुभव कर सकता था। अत: जहाँ जहाँ मुसलमानों के आक्रमण हुए पृथिवी अत्याचार से काँप उठी तैमूर, नादिर, महमूद, आलमगीर एक से एक बढ़कर अत्याचारी रहे हैं। और आज तो लीगी मुसलमानों ने इन सब से बाजी मार ली है। महात्मा गांधी और उनके अनुयायी मुसलमान, पिछले मुसलमानी अत्याचार की तो अभी भली प्रकार सफाई भी नहीं दे पायेंगे कि नोआखाली पंजाब, कश्मीर और सिन्ध विलोचिस्तान के अत्याचारों ने पिछले अत्याचारों को भी हरा-भरा कर दिया था।

आज हिन्दू बहुमत प्रान्तों में मसलमान सुख-शान्ति से निवास कर रहे हैं, परन्तु मुस्लिम बहुमत प्रान्तों में मुस्लिमेतर किसी प्रकार भी नहीं रह सकते। सबके सब बाहिर भागे, मारे गये वा बलात् मुसलमान बनाये गये। स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया गया। अबोधशिशु मार डाले गये।

यदि कहा जाय कि कुछ स्थानों पर हिन्दुओं ने भी इसका अनुकरण किया तो इसका उत्तर स्पष्ट है कि दु:ख शोक से अभिभूत, राक्षसी पापाचारों से प्रताड़ित, अनाश्रय, किंकर्तव्य विमूढ़, उत्तेजित, विक्षुब्ध हिन्दुओं ने यदि कभी कुछ किया तो वह उदाहरणीय नहीं। क्योंकि ''**बुभुक्षितः**'' किन्न करोति पापं, क्षीणा जना निष्करुणा भविन्त'' भूखा क्या पाप नहीं करता' क्षीण मनुष्य दयारहित हो जाता है। इन अत्याचारों और बर्बरताओं से विक्षिप्त हिन्दू आज कर्तव्य-अकर्त्तव्य के विवेक को खो बैठा है। क्रोध में मनुष्य अपना ही सिर पीटने और अपना ही हृदय कूटने लगता है। परन्तु यह सब भी आसुरी पाश्चात्य शिक्षा का ही प्रभाव है।

हाँ, हिन्दुओं की शासन व्यवस्था, हिन्दुओं की संग्रामनीति कभी भी अत्याचारयुक्त नहीं रही। मुसलमानों की शासन नीति और युद्ध नीति मुस्लिमेतरों के साथ ही निष्करुण और अत्याचारमयी रही हो ऐसा ही नहीं है किन्तु मुसलमानों के साथ भी बर्बरतापूर्ण रही है, देखिये :-

जबकि तुर्कों का आक्रमण खुरासान पर हुआ तो उसके सम्बन्ध में हजरत शरर क्या लिखते हैं:- इस साल (५४९ हि०) सुलतान संजर को तुरकान ग़जों के मुकाबिले दो बारा शिकस्त हुई और ऐसी शिकस्तेफ़ाश कि वह खुद उनके हाथों गिरफ्तार हो गया। मुल्क का कोई हामी व निगहबान बाकी न रहा। जिसकी किस्मत यकायक बहशी दरिद्रों 'व बेरहम लुटेरों' के हाथ में दे दी गई। वे हबशी लोग यकायक इलाका खुरासान में घुस पड़े।

'विलावतूश' व 'नीशापुर' को निहायत ही बेरहमी से लूटा। औरतों को जहाँ पाया बेइज्जत किया और उनकी अस्मतें खराब कीं। इन्हें बेहुर्मत और बेआबरू किया। और उन्हें और लड़कों को पकड़कर लौंड़ी और गुलाम बनाया। तमाम मस्जिदें तबाह और बरबाद कर दीं। लोगों के मकानात भस्मसात् मुनहदिम किये और रहे सहे उजाड़ डाले। नीशापुर में इन ज़ालिमों ने ऐसा जुल्म किया और इस कदर कत्ल और खून किया कि अपने ख्याल में तो इन्होंने किसी को जिन्दा न छोड़ा। शाज़ो नादिर ही कोई-कोई ऐसा खुशकिस्मत शख्स था जो कहीं छिपाव पाकर बच रहा। लाशों के हर तरफ बड़े-बड़े अम्बार लगे हुए थे। बहुत से लोगों ने मस्जिद में जाकर पनाह ली और उसके दरवाजे अन्दर से बन्द कर लिये, मगर इन बहशियों ने अगरचे अपने को मुसलमान समझते थे, हुजूम करके इसके दरवाजे कुल्हाड़ियों से चीर डाले और खास उसी मुकाम में जो खुदावन्द जल्लेअला का दामने आफ़ियत और बिज़ारों के नज़दीक दारुलअमान था, घुसकर सब लोगों को शहीद कर डाला। यही हालत वहाँ के बीमारस्तान की हुई। नीशापुर के मज़लेमान और जामे शहादत पीने वालों में सिपाही और अवामुन्नास ही न थे, बलिक बड़े-बड़े उलमा फुज़ला और औलिया भी थे। तमाम उलमा व शेख शहीद हुए।

''नीशापुर'' उस जमाने में इल्मो फ़जल का मखजन था। लिहाजा मुद्दत से जो कुछ सरमाया इल्मी वहाँ फराहम किया था वह भी सब खाक में मिला दिया और कुल कुतुबखानों में आग लगा दी।'' यह था मुसलमानों का मुसलमानों के साथ व्यवहार। जब किसी जाति को अत्याचार की आदत पड़ जाती है क्या अपना क्या पराया, वह सबके साथ ही अत्याचार करती है।

विरोधियों की स्त्रियों का अपमान १, सब बाल वृद्धों का वध २, पुस्तकों को जलाना ३, यह मुसलमानों की परम्परा रही है। जो नीशापुर में किया, वही भारत में किया। कर्बला से लेर पाकिस्तान तक मुस्लिम इतिहास अन्याचार से ही रंगा मिलेगा। इस समय भी इस्लामी राज्यों के केन्द्रीय राज्य अरब की सामाजिक दशा का वर्णन देखिये :-

सारी अरबी संस्कृति गुलामी की अभ्यस्त है। गुलामों और दासियों का रिवाज उनके यहां न जाने कब से चालू रहा है। अफरीका में भी गुलामों का रोज़गार करनेवाले यही अरब रहे हैं। और आज भी मक्का इनका महानतम तीर्थ इनकी संस्कृति का केन्द्र, किसी भी हालत में मध्य युग से आगे नहीं है। अगर आप मक्के जायें तो आज भी सड़कों पर आपको विकृत और जर्जर बूढ़े-भिखारियों की भीड़ मिलेगी। आज जानते हैं ये कौन हैं ? ये लोग वे अभागे गुलाम हैं जो अफ़रीका से फंसाकर लाये गये थे और अब बेकार होने पर निकाल दिये गये हैं। अरब में गुलामों के व्यापार पर कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं है। सूकेल आबिद नामक एक पतली सी गली में गुलामों का बाज़ार लगता है। उस गली में दोनों ओर गुलाम फ़रोशों के मकान हैं। और उनके मकानों के सामने पत्थर के चबूतरों पर वे अभागे गुलाम बैठे रहते हैं।

और इनमें गुलाम औरतों के उत्सुक वह तालिब इल्म होते हैं, जो कुरान शरीफ़ पढ़ते हैं। और दीने इस्लाम सीखने आते हैं। यह माल अपनी वासना पूर्ति के लिये ही नहीं खरीदते। वे उससे रोज़ी भी चलाते हैं कभी वे गुलाम औरतें खरीदते हैं। उनसे बच्चे पैदा करते हैं, साथ ही उन बच्चों को भी बेच देते हैं। जनता इनको ऊँचे दाम पर खरीदती है। क्योंकि यह हज़रत के बन्दों के व्यभिचार से पैदा होते हैं।

ऐसा क्यों है ?

इस प्रश्न का उत्तर हमारे पास तो बहुत स्पष्ट है। पुराना मंजा मंजाया है-''आर्य धर्म और इस्लाम धर्म की शिक्षा।''

हिन्दुओं के वेद शास्त्रों में समाज व्यवस्था अर्थ व्यवस्था, मित्रनीति, शत्रुनीति, मित्र होने की दशा और शत्रु होने की अवस्था, स्त्रियों की प्रतिष्ठा, बच्चों के साथ कर्त्तव्य आदि सब संसारी विषयों पर सूक्ष्म से सूक्ष्म दार्शनिक विचार विद्यमान हैं, सैकड़ों ही ग्रन्थ इन विषयों पर हैं। विनय और शील की शिक्षा सदाचार और व्रत के नियम वैदिक, बौद्ध धर्म, जैन मत, सिख मत से इतने मिलेंगे कि सब का पालन करने पर तो

मनुष्य देवताओं से भी आगे निकल जाता है। पर इस्लामी इसाइयत के धर्मों में केवल इसी पर जोर दिया गया है, कि मूर्त्तिपूजा मत करो, और अल्लाह व यहोबा की प्रार्थना करो, तथा अपने नबी को सब कुछ मानो। ये मत धर्म रूप में व्यक्तिगत तानाशाही व फ़ासिज्म, साम्राज्यवाद सिखाते हैं। तर्क और बुद्धि का काम नहीं। अपने से भिन्न मतवालों के शील सदाचार सज्जनता का बिना विचार किये उनको लूटो, मारो, आधीन बनाओ। अपने मत के आचारहीन को भी समानता का पद दो, यह शिक्षा इस मत से यत्र-तत्र है। इन मतों में ईमान लाना ही मुख्य है आचरणादि गौण। और हिन्दू, सिक्ख, जैन, बौद्ध इन आर्य धर्मों में आचरण को ही प्रमुखता दी गई है। आर्यों का राजतंत्र, प्रजातंत्र सब धर्मतंत्र रहा है। इस्लाम धर्म में वही राजा (ख़लीफ़ा) है, वही गुरु, परन्तु आर्यधर्मों में राजा के ऊपर निरीक्षणकर्त्ता ब्राह्मण हैं, इसलिये यहाँ का राजतन्त्र भी सदा कल्याणकारक ही रहा। आजकल जो हिन्दू राजतंत्र प्रजापीड़क दृष्टिगोचर होता है वह मुसलमान शासक, अंग्रेज शासकों के प्रभाव का परिणाम है। पठान्शासकों के प्रभाव से हिन्दू राजा निरंकुश बने और मुगल शासकों के प्रभाव से विलासी। अंग्रेज़ शासकों ने प्रजा से दूर रहना सिखाया और निकम्मा, निठल्ला, अपव्ययी बना डाला। जब तक राजा लोग शास्त्राधीन रहे, देवरूप रहे। और "देव" करके पुकारे गये। देखो भारत शान्ति पर्व की। भीष्मपितामह महाराजा युधिष्ठिर को उपदेश देते हैं—

हे भारत! राजा को दानशील, यज्ञशील, उपवास तपःशील तथा प्रजा के पालन में रत रहना चाहिए।

सब राजाओं का राज धर्मानुसार पालन करते हुए धार्मिक लोगों का सम्मान करना तथा उन्हें दान देना चाहिये। राजा से सम्मानित धर्म सर्वत्र माना जाता है और राजा का आचरण प्रजाओं को प्रिय होता है अतः राजा को आदर्श बनाना चाहिये, शत्रुओं को सदा दंड देने के लिये मृत्यु के समान तैयार रहना चाहिये। प्रजापीडक दस्युओं को सब प्रकार से नष्ट करें, अपने स्वार्थ से किसी को दंड न दे। राजा को प्रजा के पाप-पुण्य का चौथा भाग मिलता है। यदि प्रजा में किसी का धन आदि अपहरण किया जाय और राजा की असमर्थता के कारण ऐसा हुआ हो तो राजकेश से इसकी पूर्ति होनी चाहिये। कामी, निर्दयी, लोभी राजा प्रजा का पालन नहीं कर सकता।

इस शिक्षा में न मतमतान्तर का अग्रह है न किसी जाति धर्म वा देश का पक्षपात है। प्रजा का पालन, दुष्टों से रक्षण, श्रेष्ठों का दान, मानादि से सत्कार करना जितेन्द्रिय होकर रहना यही राजा का कर्त्तव्य है।

हिन्दूधर्म में विचारभेद के कारण किसी को मार डालने या उसे घृणा करने का उपदेश नहीं पाया जाता।

"आत्मवत् सर्वभूतेषु दयां कुर्वन्ति साधवः।
शुनि चैवश्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः।।
यस्मिन्त्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानतः।"

आदि, निगमागम वाक्यों में सब प्राणियों को आत्मवत् मानकर सब पर दया करने का उपदेश दिया गया है।

इसके विरुद्ध इस्लामी मत में तो बस राजा का यहीं काम है कि शस्त्र द्वारा मुस्लिमेतरों को इस्लाम में प्रविष्ट करे। आज तक का इतिहास इसका साक्षी है और भारतवर्ष में आज भी जो यवन हैं उनमें यही होता रहता है। हिन्दुओं में मुसलमानों के साथ कहीं भी पक्षपात का उदाहरण नहीं मिल सकता, जबकि मुसलमानी राज्य हैदराबाद आदि पक्षपात में चूर और हिन्दू प्रजा को मुसलमान बनाने में संलग्न थे। क्योंकि कुरान की शिक्षा ही ऐसी है—

"या ऐहुल्लज़ीन आमन इन्नमल मुश्रिकन नज्सुन।" सू० ९ स० ४ आयत २८ ऐ

मुसलमानो मुश्निक निरे ना पाक (अपवित्र) हैं।

नोट-मुश्निक अनेक देवता माननेवाले जैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश को माननेवाले हिन्दू और ईसामसीह तथा ईश्वर को माननेवाले ईसाई।

परन्तु कुछ मुस्लिम विद्वानों ने मुसलमानों के अतिरिक्त यहूदी बौद्ध आदि सब ही मुस्लिमेतरों को मुश्निक और काफिर लिख डाला है। और कुछ मुस्लिम विद्वान् अहले किताब (किसी ईश्वरीय पुस्तक को मानने वाले को मुश्निक तथा काफिर नहीं मानते।)

परन्तु कुरान शरीफ इनको भी कत्ल करने की

स्पष्ट शब्दों में आज्ञा देता है—

''कातिलुल्लजीन लायोमिन्न बिल्लाहि व लाबिल यौ मिल आखिरि व ला मुहर्रमून मा हर्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनून दीनल हक्किमिनल्लजीन ऊतुल किताब हता यु अजिल्यत अजिज्यत अय्यं दिववहुम् स्वाग़िरून''

अहले किताब (किसी ईश्वरीय पुस्तक को मानने वाले यहूदी ईसाई आदि) जो न खुदा को मानते हैं (जैसा कि मानना चाहिये) और न प्रलय के दिन को और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई वस्तुओं को हराम समझते हैं और दीनहक (मुसलमानी मत) को स्वीकार करते हैं मुश्निकों के अतिरिक्त इनको भी कत्ल करो यहाँ तक कि जलील होकर अपने हाथों से जज़िया दें।

कुरान में ऐसे अनेक आदेश हैं जो मुसलमानों के हृदयों में मुस्लिमेतरों के प्रति घृणा और द्वेष उत्पन्न करते हैं। और खेद है कि ये वचन इतने स्पष्ट है कि इनका दूसरा अर्थ या भाव अथवा कोई संगति नही लग पाती। हमने बहुत यत्न किया, इस्लामी विद्वानों से पूछा, कुरान के कई अनुवाद देखे कि कोई सुलझाव मिल जाय, परन्तु सब प्रयत्न निष्फल रहा, कैसा दु:ख है कि ईसाई यहूदी और हिन्दू जो कि ईश्वर को मानते हैं और ईश्वरीय पुस्तक को भी, हराम हलाल (निषेध विधि) को भी मानते हैं परन्तु मुसलमानों के समान ही नहीं मानते अत: उन्हें भी कत्ल करने का आदेश दे दिया गया है। ये असहिष्णुता की पराकाष्ठा है। अथवा अपमानित होकर कर दिया करें।

शोक है कि कुछ लोग कुरान न जाननेवालों से इन उपदेशों को छिपाये रखना चाहते हैं, परन्तु भीतर-भीतर ये उपदेश अपना विषैला प्रभाव डाले बिना नहीं रहते। यही कारण है कि मुसलमानों का व्यवहार आज तक मुस्लिमेतरों के प्रति अत्यंत कठोर रहा है। कट्टर मुसलमान शासक औरंगजेब आदि ने अपनी हिन्दू प्रजा पर ही नहीं शिया लोगों पर भी घोर अत्याचार किये।

हिन्दू राज्य के विरुद्ध एक और भ्रान्त प्रचार किया जा रहा है कि यह साम्प्रदायिक राज्य होगा। और ऐसा मिथ्याप्रचार वह लोग करते हैं कि जो स्वयं एक सम्प्रदाय या गृहबन्दी के बन्दे हैं और जिन्हों ने सदा कट्टर मुस्लिम-साम्प्रदायिकता को सींचा है। या जो रोटीराम और विदेशी चर हैं। वस्तुत: देखा जाय तो हिन्दू राज्य ही सच्चा राष्ट्रीय राज्य है, क्योंकि हिन्दू न कोई सम्प्रदाय है, न मत हिन्दू धर्म से प्रयोजन तो सार्वभौम सदाचार के नियमों से है। जैन लोग सृष्टिकर्ता ईश्वर तथा वेद को नहीं मानते। और सनातनी आर्यसमाजी ईश्वर को सृष्टिकर्ता तथा वेद को ब्रह्मवाक्य मानते हैं। वैष्णव शैव मूर्तिपूजा के विरुद्ध हैं। बौद्ध, सिख भी वेद को नहीं मानते। हिन्दुओं के धार्मिक विश्वास भिन्न-भिन्न, विवाह और खान-पान पृथक् होते हुए भी कौन-सा सूत्र है जिसमें ये सब मत-मतान्तर और जातियों के मनके पिरोये हुए एक माला का रूप धारण कर रहे हैं? यह धागा है राष्ट्रीयता का। इसके तार हैं भाषा, भाव, ऐतिहासिक पूर्वज और उने चरित्र, भारतभूमि का प्रेम और महत्त्व, संस्कृत भाषा के प्रति सबका आदर, आचरण ही इस लोक और परलोक को बनाता है, यह विश्वास रामकृष्ण, शिवाजी, प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह की कथायें, भारत तीर्थभूमि है, इन सब बातों में जिनकी एक-सी विचारधारा प्रवाहित हो रही हैं, वे सब हिन्दू हैं। एक राष्ट्र हैं। भारत के सब प्रान्तों को यही भावना अखंडता का रूप दे रही है। और जहां यह भावना नहीं है, वहीं से भारत खंडित होगया है, जैसे पाकिस्तान का भाग।

इसलिये हिन्दुत्व को सम्प्रदाय मत वा संकुचित धर्म समझना महाभ्रान्ति है। हिन्दुत्व तो सार्वभौम मानवता का आचार और भारतीय राष्ट्रीयता का ही दूसरा नाम है। हिन्दुत्व के प्रबल होने से संसार भर की दानवता मिटेगी और भारतीय राष्ट्र निर्भय नि:शंक होकर संसार को कल्याण का संदेश सुना सकेगा। हिन्दू राज्य से किसी को भय करने की जरूरत नहीं। हिन्दू तो चाहता है—

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।''

—दयानन्द संदेश (स्वराज्य अंक) सन् १९४९ से साभार

'कन्या गुरुकुल चोटीपुरा' की गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ

विश्वभर में संचालित विभिन्न शिक्षा-पद्धतियों में 'गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली' एक आदर्श एवं उत्कृष्टतम शिक्षा-प्रणाली है, जो मानव की सर्वांगीण उन्नति का प्रमुख आधारस्तम्भ है। इस परम्परा में भारत के लगभग १६ प्रान्तों की ६२६ छात्राएं 'कन्या गुरुकुल चोटीपुरा' के सादगीपूर्ण व सात्विक वातावरण में विद्याभ्यास एवं व्रताभ्यास करती हुई शैक्षिक एवं क्रीड़ाक्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त कर रही हैं। गुरुकुल की प्रमुख उपलब्धियों का विवरण निम्न प्रकार है-

शैक्षिक उपलब्धियाँ

- सभी छात्राओं का वार्षिक परीक्षा-२०१३ का उत्तीर्णांक शत-प्रतिशत रहा तथा प्राय: सभी ने ७० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये। विश्वविद्यालयीय २०१३ के परीक्षा-परिणाम में गुरुकुल की ९० प्रतिशत छात्राओं ने ७०-८० प्रतिशत की अंकोपलब्धि द्वारा 'वरीयता सूची' में स्थान प्राप्त किया।

- वर्ष २०१३ में गुरुकुल की सुयोग्य छात्रा ब्र० ऋतेशा ने 'महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक' की 'शास्त्री' परीक्षा में कु० किरण ने 'रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली' की एम.ए. (संस्कृत) में स्वर्णपदक प्राप्त कर गुरुकुल को सम्मानित किया है। ज्ञातव्य है कि विगत वर्षों में विश्वविद्यालय की शास्त्री, आचार्य तथा एम.ए. की परीक्षा में गुरुकुल की २७ छात्राएं अब तक स्वर्णपदक प्राप्त कर चुकी हैं।

- इस सत्र में (मार्च २०१४) में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में गुरुकुल की स्नातिका मोहिनी की 'संस्कृत-प्राध्यापिका' के पद पर स्थायी नियुक्ति भी गुरुकुल के गौरव का एक कीर्ति-स्तम्भ है।

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा' (NET) में विगत वर्षों की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए गुरुकुल की सुयोग्य स्नातिका कुमारी किरण तथा ज्योति ने जून २०१३ में कनिष्ठ अध्येता शोधवृत्ति (JRF) प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। उल्लेखनीय है कि सम्प्रति यावत् इस 'कन्या गुरुकुल' की ५२ स्नातिकाएं भारत की इस द्वितीय प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षा को उत्तीर्ण कर चुकी हैं, जिनमें ३३ छात्राओं ने JRF के लिए अपना स्थान सुनिश्चित किया है तथा १९ ने NET उत्तीर्ण की हैं। ध्यातव्य है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के २०१३ में प्राप्त परीक्षा-परिणाम में गुरुकुल की प्रतिभाशालिनी छात्रा कुमारी वन्दना, इस सर्वोच्च परीक्षा में ९वां स्थान प्राप्त कर नया कीर्तिमान बनाते हुए गुरुकुल-संस्कृति, संस्कृत एवं आर्यजगत् को गौरवान्वित कर चुकी है।

- दिसम्बर २०१३ में 'गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली' में आयोजित 'श्रीमन्नारायण स्मृति-स्पर्धा' में गुरुकुल की छात्राओं ने प्रतिभागियों में सर्वाधिक स्थान प्राप्त किये।

१.	ब्र० रश्मि	प्रथम	पाणिनीय उपदेश-ग्रन्थ
२.	ब्र० नेहा	प्रथम	संस्कृत-भाषण
३.	ब्र० सीता	द्वितीय	यजुर्वेद
४.	ब्र० दीपिका	द्वितीय	पाणिनीया अष्टाध्यायी
५.	ब्र० अनु	तृतीय	पाणिनीया अष्टाध्यायी
६.	ब्र० नीतिका	तृतीय	सामवेद

ज्ञातव्य है कि वर्ष २०११ तथा २०१२ में 'परोपकारिणी सभा, अजमेर' में तथा वर्ष २०१२ में 'पतंजलि योगपीठ हरिद्वार' में सम्पन्न वेदकण्ठस्थीकरण व शास्त्र-स्मरण प्रतियोगिता में गुरुकुल की अन्य १० छात्राएँ यजुर्वेद एवं सामवेद-कण्ठस्थीकरण में प्रथम व द्वितीय स्थान से पुरस्कृत हो चुकी हैं। 'पतंजलि योगपीठ' में शास्त्र-स्मरण की अन्य-स्पर्धाओं में भी भाग लेते हुए गुरुकुल की छात्राओं ने सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त कर गुरुकुल को गौरवान्वित किया है।

● २५-२८ फरवरी २०१४ में 'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान' द्वारा भोपाल में आयोजित '५२वीं अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा' में गुरुकुल की निम्नांकित छात्राओं ने उत्तम स्थान प्राप्त किये-

१.	ब्र० श्वेता	प्रथम	धातुरूप-कण्ठपाठ
२.	ब्र० रश्मि	द्वितीय	अष्टाध्यायी-कण्ठपाठ
३.	ब्र० कौशाम्बी	द्वितीय	काव्यकण्ठपाठ (रघुवंश)

स्मरणीय है कि संस्थान की २०११ तथा २०१२ की विभिन्न शास्त्रीय स्पर्धाओं में भी गुरुकुल की छात्राएँ सर्वोच्च स्थान से पुरस्कृत हुई।

● महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में २२ फरवरी २०१४ में सम्पन्न 'भाषण-प्रतियोगिता' में गुरुकुलीन छात्रा कुमारी नेहा ने संस्कृत-भाषण में प्रथम तथा कुमारी दीपशिखा ने हिन्दी-भाषण में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

क्रीड़ा-क्षेत्र की उपलब्धियाँ

● ८-११ अक्तूबर २०१३ में सम्पन्न 'तृतीय उत्तर प्रदेश तीरंदाजी प्रतियोगिता' उझानी (बदायूं) में आयोजित की गई, जिसमें गुरुकुल की छात्राओं ने प्रतिभागिता करते हुए स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्राप्त किए, जिनमें 'रिकर्व' में ईशिता, वर्षा, शिवानी का क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान रहा और 'इण्डियन राउण्ड' में नलिनी व प्राची ने प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

● मेरठ में 'उत्तरप्रदेश योग एसोसिएशन' द्वारा ९-१० नवम्बर २०१३ में सम्पन्न '३१वीं राज्य योग चैम्पियनशिप' में अपने-अपने आयु-वर्ग करुणा, आकांक्षा, अनुष्का, प्राची, विजेता ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्वर्णपदक तथा सारिका, सिमरन, किरण, गायत्री ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजतपदक प्राप्त किये।

● २३-२७ नवम्बर २०१३ में आयोजित '३८वीं राष्ट्रिय योग प्रतियोगिता' रांची (झारखण्ड) में गुरुकुल की छात्राओं किरण व आकांक्षा ने 'आर्टिस्टिक पेपर' में तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक प्राप्त किया।

इस प्रकार खेल-जगत् में गुरुकुल महाविद्यालय की छात्राओं ने धनुर्विद्या में राष्ट्रिय व अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर व्यक्तिगत तथा सामूहिक (टीम) रूप में अनेक उल्लेखनीय कीर्तिमान बनाए हैं। गुरुकुल की छात्राएँ अभी तक एथेन्स, इंग्लैण्ड, स्पेन, मलेशिया, थाइलैण्ड, बांग्लादेश, श्रीलंका, टर्की, मैक्सिको, चीन, दोहा आदि देशों में आयोजित ओलम्पिक, वर्ल्ड कप, एशियन आदि प्रमुख खेलों में प्रतिनिधित्व करती हुईं अपनी प्रतिभागिता दर्ज कर चुकी हैं और अनेक बार 'सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर' के सम्मान से भी गौरवान्वित हुई हैं। गुरुकुल की ओलम्पिक धनुर्धारिणी कु० सुमंगला को 'उत्तरप्रदेश सरकार' द्वारा 'रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार' से भी सम्मानित किया जा चुका है। इस सन्दर्भ में ध्यातव्य है कि गुरुकुल की छात्राएं धनुर्विद्या की विभिन्न स्पर्धाओं में अब तक १६४ स्वर्ण, १४४ रजत तथा १०५ कांस्य के साथ कुल ४१३ पदक प्राप्त कर चुकी हैं।

शैक्षिक एवं क्रीड़ा जगत् की विभिन्न प्रतियोगिताओं में कीर्तिमान स्थापित करने वाली गुरुकुल की सभी होनहार छात्राएं बधाई की पात्र हैं। निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर यह 'कन्या गुरुकुल चोटीपुरा' अपने सहयोगी बन्धुओं का आभारी है।

— आचार्या, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा

योगसूत्रों को कण्ठस्थ करके सुनाने वाले बच्चे सम्मानित

झज्जर (मार्च २०१४) गुरुकुल झज्जर के ९९वें वार्षिक महोत्सव में भारत स्वाभिमान झज्जर के सहसंयोजक श्री रामनिवास योगार्थी की देखरेख में प्रशिक्षित पन्द्रह होनहार बच्चों को स्वामी रामदेव जी के गुरु आचार्य बलदेव जी प्रधान आर्य सार्वदेशिक सभा, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सेनापति स्वामी डॉ० देवव्रत जी आचार्य, आर्ष गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी, गुरुकुल झज्जर के संचालक आचार्य विजयपाल जी, ब्र० चन्द्रदेव जी आदि के नेतृत्व में प्रत्येक बच्चे को च्यवनप्राश का एक किलोग्राम का डिबबा प्रदान किया। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार ने योगशिक्षकों के लिए ८६ सूत्रों का चयन किया हुआ है। उपरोक्त बच्चों ने ८६ सूत्रों का मौखिक सुनाया। माता गेट की कनिका आठवीं, छावनी मौहल्ला की सोनम छठी, बेरी गेट की काजल आठवीं और भट्टी गेट मौहल्ला के पहली कक्षा के छात्र अनमोल आर्य को योगदर्शनम् के लगभग सम्पूर्ण १९५ सूत्र याद है। आचार्य बलदेव जी ने कहा- विश्वभर में मिडल स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में योगदर्शनम् के सम्पूर्ण सूत्र कण्ठस्थ करके सुनाने वाले भारत स्वाभिमान झज्जर के इन बच्चों ने एक अद्वितीय कीर्तिमान् स्थापित किया है। शशांक, पारूल, नन्दिनी, ऋतु, रेखा, अक्षांश, हर्ष, दिक्षा, काजल, आरती, लक्ष्य नामक विद्यार्थियों ने शेष १०९ योगसूत्र (=१९५-८६) २३ मार्च २०१४ से पूर्व याद करने का संकल्प लिया।

योगदर्शनम् के सम्पूर्ण ग्रन्थ को सुनाने वाले बच्चे डॉ० सुमन जी एवं साध्वी अपराजिता जी द्वारा सम्मानित

झज्जर शहर के प्रसिद्ध बाबा प्रसाद गिरि मन्दिर में वार्षिकोत्सव पर साध्वी अपराजिता जी (त्रिलोकी नाथ विश्व सेवा संस्था हरिद्वार) ने भी इन बच्चों को सम्मानित किया। सम्मान में प्रत्येक बच्चे को बैंक में कॉपी खोलने के लिए महाशय रतिराम आर्य ने ११०० रुपये तथा योग साधना एवं चिकित्सा रहस्य पुस्तक प्रदान किए। भारत स्वाभिमान झज्जर के सह संयोजक श्री रामनिवास जी योगार्थी की देखरेख में प्रशिक्षित उपरोक्त बच्चों को साध्वी अपराजिता जी ने ५१०० रुपये तथा प्राध्यापक द्वारका प्रसाद जी ने ५१०० रुपये बच्चों की ड्रेस के व्यय में मदद के लिए दिए।

मन्दिर के महन्त स्वामी परमानन्द गिरी जी महाराज, सेवाव्रती ब्र० आशु आर्य, कन्या गुरुकुल लोवा कलां बहादुरगढ़ की आचार्य विद्यावती जी, श्री राजबीर जिला संयोजक जी, श्री प्रवीण आर्य जी, सूबेदार भरतसिंह जी आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : ५०-०० रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : १ किलो २०० रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : २५-०० रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : १३०-०० रुपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि)	१५-००
३.	हरयाणा के प्राचीन मुद्रांक	६००-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	छन्दःशास्त्रम् (व्रतिमंगलावृत्ति)	४५-००
७.	काव्यालकारसूत्राणि (व्रतिमंगलावृत्ति)	२५-००
८.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (चन्द्रमणि)	२५०-००
९.	योगार्यभाष्य (आर्यमुनि)	२०-००
१०.	सांख्यार्यभाष्य (आर्यमुनि)	४०-००
११.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१२.	वैशेषिकार्यभाष्य (आर्यमुनि)	६०-००
१३.	न्यायार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१००-००
१४.	वेदान्तार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१२०-००
१५.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग)	६५०-००
१७.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	२५०-००
१८.	वृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	१५०-००
१९.	उपनिषत्समुच्चय (पं० भीमसेन)	१००-००
२०.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
२१.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प	३०-००
२२.	दयानन्दप्रकाश (स्वा० सत्यानन्द)	५०-००
२३.	हरयाणा के प्राचीन मुद्रांक (२)	२५०-००
२४.	हरयाणा के प्राचीन लक्षणस्थान	३००-००
२५.	देशभक्तों के बलिदान	१२५-००
२६.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	४०-००
२८.	यजुर्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	१००-००
२९.	सामवेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	८०-००
३०.	अथर्ववेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३१.	ऋग्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३२.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
३३.	ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३४.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३५.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३६.	घर का वैद्य (१-५ भाग)	१००-००
३७.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	२५-००
३८.	ब्रह्मचर्य के साधन (१-११ भाग)	६०-००
३९.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२५०-००
४०.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
४१.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दो में)	१२००-००
४२.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४३.	प्राचीन शिलालेख एवं ताम्रलेख	२००-००
४४.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४५.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	५५०-००
४६.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	००.००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2014-16

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____ पि _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।